पाकिस्तान से ताज़ा ग़ज़लें

पाकिस्तान से ताज़ा ग़ज़लें

संपादक

नरेन्द्र नाथ



राधाकृष्ण

प्रथम संस्करण : 1980

मूल्य
18 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

भूमिका

पुरानी दिल्ली मे मस्ल मशहूर है कि एक पड़ोसिन जवान हो तो मुहल्ले मे दस गज़लें कही जाती है। गजल के मिसरों पर किसी एक मात्रा-मीटर की रोक तो नही, पर तुक की बंदिश जरूर है। गजल पर तुक मिलाने की यह शर्त, गजल की कमज़ोरी भी है और ताकत भी। नौसिखिये शायरी शुरू करते वक़्त गज़ल का दामन पकडते है क्योंकि जमे-मँजे अलफाज (शराब-शबाब, पानी-जवानी, निशानी-कहानी, वफा-जफा) का सहारा लेकर तुकबंदियों का मजमुआ खड़ा करना कोई बहुत मुश्किल काम नही होता। लेकिन गजल की सल्तनत सिर्फ़ रंगीन लिफ़ाफ़ों और खुशबूदार रूमालों के धुएँ से भरे कमरो की तग चौहद्दी ही नही, खिडकियो से बाहर फैले आसमान की तरह एक मुसव्विर का खुला कैनवस भी है। अपने हमअस्र शायरो के मुकाबिले 'गालिब' और 'हाली' ने साबित किया था कि गजल नये तसव्वुरात का इजहार करने की कोशिश मे टूटती नही, बल्कि नये तजुर्बों को समोने के बाद खनकती है, हुमसती है, चमकती है। गजल का दायरा अँगूठी की गोलाई नही जो सिर्फ एक दौर, सदी, शायर तक महदूद होकर रह जाये। गजल के इमकानात में एक उडान का फैलाव है। गजल इस सदी की नौवीं दहाई तक बरकरार है क्योंकि गजल कहने वाले शायरों की बेखुदी की बुनियाद है अपने मौजूअ से मुकम्मल हम-आहंगी, क्योंकि आम ज़िंदगी के मसाइल की चुभन समो लेने के बाद, गजल की मौजूदा तवानाई मे उस तरक्की-पसंद तहरीक का भी अमल-दख्ल है जिसने सन् 1930 के बाद से नयी अदबी मंज़िलों की निशानदही की।

इस तहरीक के दो दौर हैं . एक आजादी से पहले का और दूसरा आजादी के बाद का। आजादी से पहले अदब की तरक्कीपसंद तहरीक के अलमबरदार शायरो ने उस जमाने में एक बागी रविश अख्तियार की जब मुशायरों और रिसाइल मे 'जिगर' और 'सीमाब' की तूती बोल रही थी।

सन् 1947 के बाद की दूसरी तहरीक मे पाकिस्तानी शायरी को सियासी

हालात से अलग रखकर नहीं समझा जा सकता। पाकिस्तान का क़याम सिर्फ़ एक ज़मीन के टुकड़े की तकसीम भर नहीं, एक तहज़ीबी इकाई और समाजी कबीले की तकसीम भी थी। आजादी की सुबह जिस अरजानी के साथ दो करोड़ इंसानों पर तुलू हुई उसमें दिमागों का सुलगना ऐन फितरत था। शायर समाज का हस्सासतरीन फ़र्द होता है। (यह बात अदबी बहसों में मुतवातिर दोहराई जाकर घिस-पिट चुकने के बाद भी सच है।) हिंदुस्तानी फनकारों के मुकाबिले में पाकिस्तानी फनकार के ज़हनी और तहज़ीबी अहसास थोड़े-से अलग रहे हैं। पाकिस्तान की बुनियाद एक इस्लामी रियासत कायम करने के लिए रखी गयी थी। पाकिस्तान के हुक्मरान धर्मश्रुत पहले थे, कविता-प्रेमी बाद में। फिर जो सियासी और इक्तसादी निज़ाम पाकिस्तान में पनपा, उसमें मुल्क की माली और दिफाई मजबूरियों के सबब रद्दो-बदल की गुंजाइश न थी। उन पाकिस्तानी फ़नकारों के लिए नये मुल्क में मआशरत की असास की बेशऊरी का दर्द और भी ज़्यादा कर्बनाक साबित हुआ, जो हिंदोस्तान से अलग पाकिस्तान की जुदागाना हैसियत के मुतलाशी होने के अलावा एक ऐसे मआशरे की तामीर का भी ख्वाब देख रहे थे जहाँ अमीरी-गरीबी का कड़वा इम्तियाज़ न हो।

लेकिन पाकिस्तान में ऐसे लोगों की हिम्मत अफ़ज़ाई तो दूर, ये तरक्कीपसंद अदीब पहले सेंसर की कलम के तले स्याह किये गये, फिर जेल की कोठरियों में तबाह।

सन् 1960 के आसपास लिखी गयी गजलों में इसी जुल्म के ख़िलाफ़ बगावत का पैग़ाम उभरता है। "हम परवरिशे-लौहो-कलम करते रहेंगे", "मैं कब से गोश-बर-आवाज हूँ, पुकारो भी" जैसी गजलें रिवायती मफहूम के अलफाज को ताज़ा अलामतों के तौर पर पेश करते हुए औज़ानो-असूल और क़ाफ़ियाबंदी के नये पैकर बुनती हैं। ताज़ा खयालों से तराशी हुई इस दौर की गजलों में एक खासियत यह भी है कि अलफाज और अलामतों को असर-अंगेज़ बनाने के तजुर्बों में भी इन शायरों ने कैदो-बंद की सऊबतों और गजल की रिवायती जामा-ज़ेबी पर कोई हर्फ़ नहीं आने दिया, न ही इन गजलों की असर-आफ़रीनी किसी एक तबके या गिरोह का खिलौना रही। वैसे तो उर्दू शायरी के पुराने और नये दोनों वक्तों के शायरों ने अलफ़ाज़ का इस्तेमाल एक मुसव्विर के कलम की मानिंद महसूस सूरते-हाल में रंगकारी और नक़्क़ाशी के लिए किया है। लेकिन इन गजलों में सिर्फ़ रवायात कायम रखने के नाम पर गैर-मानूस अलफाज का बोझ ढोने की मजबूरी नहीं, आम बोलचाल की ज़ुबान में अछूते मिसरे कहने की कोशिश है।

इन गज़लों के ज्यादातर शायर मिडिल-क्लासी शहरी तबके से हैं। तनहाई इस दौर की ग़ज़ल का अहम मौज़ू है। यह तनहाई किसी जागीरदारी ऐयाशी

का कबूतरबाज अकेलापन नहीं, भीड में घुटते हुए, खुदकुशी की तरफ धकेले जाते एक कैदी की चीख है जो न अपना जुर्म जानता है, न सजा।

लेकिन ये गजलें पढते वक्त ऐसा भी लगता है कि ये शायर गाजिये-गुफ़्तार होने के बावजूद उन कमजोर और डरपोक लोगों से ज्यादा अलग नही जो चीथडे पहने, दिन-भर की कमाई का चौथा हिस्सा खर्च करके, लबी लाइन मे रिश्वत-खोर पुलिस के डंडे खाने के बाद खरीदे गये टिकट मे स्मगलरो की कामयाब-खुशहाल-भरपूर जिंदगी पर बनी फ़िल्में देखकर तालियाँ बजाने के बाद लौटकर टूटी चारपाइयों और मैले बिस्तरों पर सो जाते है, लेकिन स्मगलराना निज़ाम की बेईमानी के खिलाफ मर मिटने की बात नही सोचते। इन गजलो मे कुन-मुनाता हुआ इकलाब का बुलावा किसी म्यान से खिचती हुई तलवार की सरस-राहट जैसा तेज, किसी कोडे की चोट जैसा तुर्श या किसी नगी पीठ पर खिचती हुई बेंत जैसा तल्ख बुलावा नही है। इन गजलो की नवा एक गडरिये की बाँसुरी है जो भेडों को इकट्ठा भले कर ले, पर चरागाहो की मिल्कियत बदल देने वाला लावा नही खौलाती।

शायद इसीलिए ये गजलें दिल तो बहलाती हैं, रास्ता नही दिखाती।

बहरहाल, मैंने इस संकलन मे ज्यादातर वही गजलें शामिल करने की कोशिश की है जो अभी तक हिंदी में निकले दूसरे संग्रहो मे नही छपी। पता नही अपनी इस कोशिश मे कहाँ तक कामयाब रहा हूँ।

यहाँ मैं देवनागरी लिपि मे उर्दू साहित्य छापने की परपरा मजबूत करने वाले दो नामो—अयोध्या प्रसाद गोयलीय और प्रकाश पडित—के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा। मैं इन दोनों सज्जनों से कभी मिला नही, लेकिन इन लोगो ने पहल न की होती तो शायद सन् 1947 के बाद सिर्फ हिंदी-इग्लिश-भाषी स्कूलों मे पढे मेरी पीढ़ी के लाखो लोग उर्दू कविता की विरासत से वचित रह जाते। लिपि की परपरा तोड़कर ये लोग जिस तरह हिंदी और उर्दू को करीब लाये, यह सकलन उसी सिलसिले की एक कड़ी है और इन लोगो के तईं शुक्राना भी।

कडकडाती ठंड के दिनों मे मियाँ मुन्नी ने किताबी शोध की। अकीला इस्लाम ने इस्लाह दी। अमन, अमन की माँ, प्रदीप, सदीप, विक्रान्त ने मेरा मन लगाये रखा। मैं इन्ही सबसे आश्वस्त हुआ हूँ।

सितम्बर, 1980 —नरेन्द्र नाथ

अनुक्रम

अख़्तर अंसारी अकबराबादी

दिखाते हैं पुराने ख़्वाब कुछ धुँधली-सी तस्वीरें
किसे मालूम क्या होंगी नये ख़्वाबों की ताबीरें[1]
नजर आती है जिंदाँ में जो जंग-आलूद[2] जंजीरें
जिला[3] देकर बना लो उनसे जौहरदार शमशीरें[4]
जमीं पर क्या नहीं है आस्माँ की सिम्त क्यों देखे
अगर जर्रों[5] से फ़ुरसत हो, सितारों के जिगर चीरें
समझकर अह्ले-दिल अपने जमाने का असर लेना
जमाने की हवा में मुख़्तलिफ़[6] होती हैं तासीरें[7]
यग़ीरे-हौसला रंजे-असीरी[8] कम नहीं होता
जो हो जुंबिश[9] रगो-पै में तो शर्माती है ज़ंजीरें
यह मैंने बेख़ुदी में क्या कहा, दुनिया ने क्या समझा
ग़लत राहें न दुनिया को दिखा दें मेरी तक़्सीरें[10]
जहाने-शे'र[11] की सूरतगरी[12] 'अख़्तर' जरा देखो
यह वह महफ़िल है जिसमें मुँह से बोल उठती हैं तस्वीरें

---

1. परिणति, साकार रूप 2. जंग लगी हुई 3. चमक 4. तलवारें 5. कण 6. विभिन्न 7. प्रभाव 8. क़ैद का दुख 9. हरकत 10. दोष 11. छंदों की दुनिया 12. चित्रकारी।

अतहर नफ़ीस

एक

कभी साया है, कभी धूप मुक़द्दर मेरा
होता रहता है यूँ ही क़र्ज़ बराबर मेरा
टूट जाते है कभी मेरे किनारे मुझमें
डूब जाता है कभी मुझमें समंदर मेरा
किसी सहरा में बिछड़ जायेंगे सब यार मेरे
किसी जंगल में भटक जायेगा लश्कर मेरा
बावफ़ा था, तो मुझे पूछनेवाले भी न थे
बेवफ़ा हूँ तो हुआ नाम भी घर-घर मेरा
कितने हँसते हुए मौसम अभी आते लेकिन
एक ही धूप ने कुम्हला दिया मंजर[1] मेरा
आख़िरी जुर्अए-पुर-कँफ़ हो शायद बाक़ी[2]
अब जो छलका तो छलक जायेगा सागर मेरा

दो

रौनक़े - बेशो - कम[3], किसके होने से है
मौसमे - ख़ुश्को - नम[4] किसके होने से है
किसका चेहरा बनाती है ये साअतें[5]
वक़्त का ज़ीरो-बम[6] किसके होने से है
कौन गुजरा कि बनते गये रास्ते
राह का पेचो-ख़म[7] किसके होने से है

---

1. दृश्य 2. शायद नशे से भरा आख़िरी घूंट बचा हो 3. थोड़ी-बहुत
4. सूखा-गीला मौसम 5. क्षण 6. ऊँच-नीच 7. घुमाव-फिराव।

किसकी ख़ातिर दरीचों से आयी हवा
यह फ़ज़ा[1] यूँ बहम[2] किसके होने से है
शाख़-दर-शाख़ पत्तों की यह ज़िंदगी
आज भी मुहतरम[3] किसके होने से है
मौत बर-हक़[4] है किसके न होने से आज
ज़िंदगी दम-ब-दम किसके होने से है
किसकी ज़ुल्फ़ों का एजाज़[5] है बूए-गुल[6]
यह हवाओं में नम किसके होने से है
सुब्हे-शादाबिए-जां का क्यों है मलाल[7]
इशरते-शामे-ग़म[8] किसके होने से है
वहशते-दिल को किसने सँभाला दिया
यह जुनूँ कम से कम किसके होने से है
किससे मंसूब[9] है हर जफ़ा हर वफ़ा
यह सितम यह करम किसके होने से है

तीन

इतने दिन के बाद तू आया है आज
सोचता हूँ किस तरह तुझसे मिलूँ
मेरे अंदर जाग उठी इक चाँदनी
मैं ज़मीं से आस्माँ तक अंग हूँ
और उजला हो गया क़ुर्बत[10] का चाँद
और गहरा हो गया तेरा फ़ुसूँ[11]
ऐ सरापा रंगो-नकहत[12], तू बता
किस धनक से तेरा पैराहन[13] बुनूँ
सारे गुल-बूटे तरो-ताज़ा हुए
दूर तक पहुँची है मेरी मौजे-ख़ूँ[14]

---

1. वातावरण 2. परस्पर जुड़ा हुआ, एक साथ
4. अनिवार्य 5. चमत्कार 6. फूल की महक 7. प्र[illegible]
दुख क्यों है 8. गम की शाम का आनन्द 9. संबं[illegible]
12. ऐ सर से पाँव तक रंग और खुशबू 13. [illegible]

कर रहे हैं लम्हे-लम्हे का हिसाब
मिलके फिर बैठे हैं याराने-जुनूं
दश्ते-ग़म[1] की धूप में मुझ पर खुला
मैं खुद अपना सायए-दीवार हूँ
नाज़ कर खुद पर कि तू है बेशुमार
क़द्र कर मेरी कि मैं बस एक हूँ

चार

सौ रंग है किस रंग से तस्वीर बनाऊँ
मेरे तो कई रूप है, किस रूप में आऊँ
क्यों आके हर इक शख्स मेरे जख्म कुरेदे
क्यों मैं भी हर इक शख्स को हाल अपना सुनाऊँ
क्यों लोग मुसिर हैं कि सुनें मेरी कहानी
यह हक़ मुझे हासिल है, सुनाऊँ कि छुपाऊँ
इस बज्म में अपना तो शनासा[2] नहीं कोई
क्या कर्ब[3] है तनहाई का, मैं किसको बताऊँ
कुछ और तो हासिल न हुआ ख्वाबों से मुझको
बस यह है कि यादों के दरो-बाम[4] सजाऊँ
बेकीमतो - बेमायः[5] इसी खाक में यारो
वह खाक भी होगी जिसे आँखों से लगाऊँ
किरनों की रफ़ाक़त[6] कभी आये जो मयस्सर[7]
हमराह मैं उनके तेरी दहलीज पे आऊँ
ख्वाबों के उफ़क़[8] पर तेरा चेहरा हो हमेशा
और मैं इसी चेहरे से नये ख्वाब सजाऊँ
रह जायें किसी तौर मेरे ख्वाब सलामत
इस एक दुआ के लिए अब हाथ उठाऊँ

1. दुख का जंगल 2. परिचित 3. पीड़ा 4. दरवाजा और अटारी
5. मूल्यहीन और महत्वहीन 6. संगत 7. उपलब्ध 8. क्षितिज।

पाँच

न शाम है न सवेरा, अजब दयार[1] में हूँ
मैं एक अरसए-बेरंग के हिसार[2] में हूँ
सिपाहे-ग़ैर[3] ने कब मुझको ज़ख्म-ज़ख्म किया
मैं आप अपनी ही साँसों के कारज़ार[4] में हूँ
कशाँ-कशाँ[5] जिसे ले जायेंगे सरे-मक़्तल[6]
मुझे ख़बर है कि मैं भी उसी कतार में हूँ
शरफ़[7] मिला है कहाँ तेरी हमरही[8] का मुझे
तू शहसवार[9] है और मैं तेरे ग़ुबार[10] में हूँ
अता-पता किसी ख़ुशबू से पूछ लो मेरा
यहीं कहीं किसी मंजर, किसी बहार में हूँ
मैं ख़ुश्क पेड़ नहीं हूँ कि टूटकर गिर जाऊँ
नुमू-पज़ीर[11] हूँ और सर्वो-शाख़सार[12] में हूँ
न जाने कौन से मौसम में फूल महकेंगे
न जाने कब से तेरी चश्मे-इंतज़ार[13] में हूँ
हुआ हूँ क़र्यए-जाँ[14] में कुछ इस तरह पामाल[15]
कि सर-बलंद तेरे शह्‌रे-ज़र-निगार में हूँ[16]

छः

वह इश्क़ जो हमसे रूठ गया, अब उसका हाल बतायें क्या
कोई मेह्‌र[17] नहीं, कोई क़ह्‌र[18] नहीं, फिर सच्चा शेर सुनायें क्या
इक हिज्र[19] जो हमको लाहिक़[20] है, ता-देर उसे दोहरायें क्या
वह ज़ह्‌र जो दिल में उतार लिया, फिर उसके नाज़ उठायें क्या

---

1. स्थान 2. घेरा 3. विरोधी सेना 4. युद्ध 5. खींचते हुए 6. कत्ल करने की जगह 7. सम्मान 8. रास्ते में साथ चलना 9. बहुत अच्छा घुड़सवार 10. धूल 11. विकसित होता हुआ 12. वह जगह जहाँ बहुत-से सीधे और सुंदर पेड़ हों 13. आँख की प्रतीक्षा 14. प्राण का गाँव 15. पाँव तले रौंदा हुआ 16. कि अपना सर ऊँचा किये तेरे स्वर्ण चित्रित शहर में हूँ 17. कृपा 18. प्रकोप 19. विरह 20. मिलने वाला

फिर आँखें लहू से खाली हैं, ये शम्एँ बुझने वाली हैं,
हम खुद भी किसी के सवाली है, इस बात पे हम शरमायें क्या
इक आग ग़मे-तनहाई की जो सारे वदन में फैल गयी
जब जिस्म ही सारा जलता हो, फिर दामने-दिल को बचायें क्या
हम नग्मा-सरा[1] कुछ ग़ज़लों के, हम सूरतगर[2] कुछ ख्वाबों के
बे-जज्बए-शौक़ सुनायें क्या, कोई ख्वाब न हो तो बतायें क्या

1. अच्छी आवाज़ से गानेवाला 2. चित्रकार

अदा जाफ़री

एक

आख़िरी टीस आज़माने का
जी तो चाहा था मुस्कुराने को
याद इतनी भी सख़्त-जाँ तो नहीं
इक घरौंदा रहा है ढाने को
संगरेज़ों[1] में ढल गये आँसू
लोग हँसते रहे दिखाने को
ज़ख़्मे-नग़मा[2] भी लौ तो देता है
इक दिया रह गया जलाने को
जलनेवाले तो जल-बुझे आख़िर
कौन देता ख़बर ज़माने को
कितने मजबूर हो गये होंगे
अनकही बात मुंह पे लाने को
खुलके हँसना तो सबको आता है
लोग तरसे हैं इक बहाने को
रेज़ा-रेज़ा[3] बिखर गया इंसाँ
दिल की वीरानियाँ जताने को
हसरतों की पनाहगाहों[4] में,
क्या ठिकाने है सर छुपाने को

1. पत्थर के छोटे टुकड़े 2. गीत का घाव 3. कण 4. वह स्थान जहाँ सुरक्षित रहा जा सके

हाथ काँटों से कर लिये जख़्मी
फूल वालों में इक सजाने को
आस की बात हो कि साँस 'अदा'
ये खिलौने थे टूट जाने को

दो

तौफ़ीक़[1] से कब कोई सरोकार चले है
दुनिया में फ़क़त[2] तालिए-बेदार[3] चले है
ठहरूँ तो चट्टानों-सी कलेजे पे खड़ी है
जाऊँ तो मेरे साथ ही दीवार चले है
हर गुंचा[4] बड़े चाव से खिलता है चमन में
हर दौर का मंसूर[5] सरे-दार[6] चले है
रंगों की न खुशबू की कमी है दिलो-जाँ को
तोशा[7] जो चले साथ वह इक खार चले है
दिल के लिए बस आँख का मेयार[8] बहुत है
जो सिक्कए-जाँ है, सरे-बाजार चले है
हैरत से शिगूफ़ों की झपकती नहीं आँखें,
किस आन से काँटों का खरीदार चले है
खुरशीद[9] वहाँ हमने सुलगते हुए देखे
किरनों का जिस आशोब[10] में ब्योपार चले है
इक जुम्बिशे-मिजगाँ[11] की इजाजत भी नहीं है
दिल साथ चला है कि सितमगार चले है
थे खिज्र भी लाखों यहाँ, ईसा भी बहुत थे
आजार[12] जो दिल का है सो आजार चले है

---

1. सामर्थ्य 2. केवल 3. सौभाग्य 4. कली 5. एक वली जिन्होंने "अनल-हक" (मैं खुदा हूँ) कहा था और इस अपराध मे उनकी गरदन काटी गयी थी 6. फाँसी का फंदा गले में डाले 7. सफर में खाने-पीने का सामान 8. परख 9. सूरज 10. हलचल 11. पलकों की हरकत 12. बीमारी

तीन

शायद अभी है राख में कोई शरार[1] भी
क्यों वरना इंतजार भी है इज्तिरार[2] भी
ध्यान आ गया है मर्गे-दिले-नामुराद[3] का
मिलने को मिल गया है सुकूं भी, क़रार भी
अब ढूंढने चले हो मुसाफ़िर को, दोस्तो
हद्दे-निगाह[4] तक न रहा जब गुबार भी
हर आस्तां[5] पे नासिया-फर्सा[6] है आज वह
जो कल न कर सके थे तेरा इंतजार भी
इक राह रुक गयी तो ठिठक क्यों गयी 'अदा',
आबाद बस्तियां हैं पहाड़ों के पार भी

1. चिंगारी 2. आतुरता 3. नाकाम दिल की मौत 4. दृष्टि की सीमा
5. चौखट 6. माथा रगड़नेवाला

अनवर अदीब

शहर के सोगवारों[1] के हम दरमियाँ
और हमारे दिलों के है ग़म दरमियाँ
साँय - साँय सिसकती हुई दोपहर
दर्द गाड़ा हुआ इक अलम[2] दरमियाँ
दूर तक देखने को ख़ला[3] ही ख़ला
आधा उठा हुआ इक क़दम दरमियाँ
पार करने को दरिया बहुत बेपनाह
टूट जाने को कच्चा भरम दरमियाँ
जब भी होने लगा आमना - सामना
रख लिया एक काग़ज़-क़लम दरमियाँ
चाल सुथरी चलो चाहे मद्धम चलो
टूट जाता है वरना तो दम दरमियाँ

1. शोकग्रस्त 2. झंडा 3. शून्य

अमजद इस्लाम 'अमजद'

एक

हर क़दम गुरेज़ाँ[1] था, हर नज़र में वहशत[2] थी
मस्लहत-परस्तों की रहबरी क़यामत थी[3]
मंज़िले-तमन्ना तक कौन साथ देता है
गर्दे-सइए-लाहासिल[4] हर सफ़र की क़िस्मत थी
आप ही बिगड़ता था आप मान जाता था
उस गुरेज़-पहलू[5] की यह अजीब आदत थी
उसने हाल पूछा तो याद ही न आता था
किसको किससे शिकवा था, किससे क्या शिकायत थी
दश्त[6] में हवाओं की बेरुख़ी ने मारा है
शहर में ज़माने की पूछ-गछ से वहशत थी
यूँ तो दिन-दहाड़े भी लोग लूट लेते हैं
लेकिन उन निगाहों की और ही सियासत थी
हिज्र का ज़माना भी क्या ग़ज़ब ज़माना था
आँख में समंदर था ध्यान में वह सूरत थी

दो

चुपके-चुपके ही असर करता है
इश्क़ कैंसर की तरह बढ़ता है
रात के पिछले पहर तारों में
एक हंगामा मचा रहता है

1. भागता हुआ 2. भय 3. सिर्फ़ अपने भले-बुरे का ध्यान रखकर काम करने वालों का नेतृत्व भी क़यामत था 4. निष्फल प्रयत्न की धूल 5. बच निकलने का ढब 6. जंगल

जो कोई जी न सके मर जाये
आपका नाम अबस[1] लेता है
घर से भागे हुए बच्चे की तरह
दिल सरे - शह्रे - वफ़ा, तनहा है
ख्वाब में जिससे परेशान थे हम,
आँख खोली तो वही नक़्शा है
कौन सुनता है किसी की विपदा
सबके माथों पे यही क़िस्सा है
कोई डरता है भरी महफ़िल में
कोई तनहाई में हँस पड़ता है
यही जन्नत है यही है दोज़ख़
और देखो तो यही दुनिया है
सबकी क़िस्मत में फ़ना है जब तक
आस्मानों पे कोई ज़िंदा है
वह ख़ुदा है तो ज़मीं पर आये
हश्र का दिन तो यहाँ बरपा है
साँस रोके हुए बैठो 'अमजद'
वक़्त दुश्मन की तरह चलता है

तीन

दिल में लावा उबल रहा है क्या
कोई कोहसार[2] जल रहा है क्या
ख्वाबे-फ़र्दा[3], ज़मीं पे ज़ाहिर हो
मेरी आँखों में पल रहा है क्या
चश्मे - शबनम[4], सफ़ीरे - ग़ुंचा[5] बन
यूँ हवा बनके चल रहा है क्या
आ, शरीके - ग़मे - ख़ुदाई[6] हो
अपनी वहदत[7] में गल रहा है क्या

1. व्यर्थ 2. पर्वतमाला 3. आनेवाले कल का सपना 4. ओस की आँख 5. कली का पैग़ाम पहुँचानेवाला 6. संसार के दुखों का साझीदार 7. एकत्व

इतने आसूदा[1] क्यों हैं अह्ले-सफ़र
सर से तूफ़ान टल रहा है क्या
किसलिए बदहवास[2] है तारे
कोई सूरज निकल रहा है क्या
क्यों हवा इस क़दर रुकी-सी है
कोई तूफ़ान पल रहा है क्या
काटकर फेंक दे इन्हें 'अमजद'
ऐसे हाथों को मल रहा है क्या

1. संतुष्ट 2. बौखलाये हुए

अहमद कमाल

एक

कोई चेहरा हुआ रोशन न उजागर आँखें
आईना देख रही थीं मेरी पत्थर आँखें
फूट निकलीं तो कई शह्‌रे-तमन्ना डूबे
एक क़तरे को तरसती हुई बंजर आँखें
ले उड़ी वक़्त की आँधी जिन्हें अपने हमराह
आज फिर ढूँढ रही हैं वही मंज़र[1] आँखें
उसको देखा है तो अब शौक़ का वह आलम है
अपने हल्क़ों से निकल आयी हैं बाहर आँखें
तू निगाहों की ज़बाँ खूब समझता होगा
तेरी जानिब तो उठा करती है अक्सर आँखें
लोग मरते न दरो-बाम[2] से टकराके कभी
देख लेते जो 'कमाल' उसकी समंदर आँखे

दो

अजनबी खौफ़ फ़जाओं में बसा हो जैसे
शह्‌र का शह्‌र ही आसेब-ज़दा[3] हो जैसे
रात के पिछले पहर आती हैं आवाजें-सी
दूर सहरा में कोई चीख रहा हो जैसे
दरो-दीवार पे छायी है उदासी ऐसी
आज हर घर से जनाजा-सा उठा हो जैसे
मुस्कुराता हूँ पए-ख़ातिरे-अहबाब[4] मगर
दुख तो चेहरे की लकीरों पे सजा हो जैसे
अब अगर डूब गया भी तो मरूँगा न 'कमाल'
बहते पानी पे मेरा नाम लिखा हो जैसे

1. दृश्य 2. दरवाजा और अटारी 3. जिस पर जिन्न या भूत का साया हो
4. मित्रों का दिल खुश करने के लिए

अहमद नदीम क़ासमी

एक

बरहना-पा[1] मैं सूए-दश्ते-दर्द[2] चलता हूँ
मैं अपनी आग में अपनी रज़ा से जलता हूँ
मेरे सुपुर्द हैं तख़्लीके-हुस्न के मेयार[3]
मैं रोज़ो-शब[4] की तरह दम-ब-दम[5] बदलता हूँ
मेरे मिज़ाज[6] की चारागरी करेगा कौन
चमन की राह से सहरा[7] में जा निकलता हूँ
अगर जला न सका मुझको आफ़ताब[8] कोई
मैं रंगो-बू[9] की तमाज़त[10] में क्यों पिघलता हूँ
मुझे तो पैकरे-महसूस[11] से मोहब्बत है
मैं सिर्फ़ एक तसव्वुर[12] से कब बहलता हूँ
समेट लेता है बाँहों में मेरा इश्क़ मुझे
मैं जब भी फ़िक्र की ढलवान से फिसलता हूँ
रुतों के जब्र[13] से आज़ाद हो चुका हूँ 'नदीम'
ख़िज़ां में फलता हूँ, आँधियों में फलता हूँ

दो

यूँ तो मैं दश्त[14] पे भी परतवे-गुलशन[15] देखूँ
सायए-गुल[16] में मगर साँप का मस्कन[17] देखूँ

---

1. नंगे पाँव 2. दुख के जंगल की ओर 3. सौन्दर्य की रचना की कसौटी 4. दिन-रात 5. क्षण-प्रतिक्षण 6. स्वभाव 7. रेगिस्तान 8. सूरज 9. फूलों का रंग और उनकी सुगंध 10. गर्मी 11. वह शरीर जिसे महसूस किया जा सके 12. कल्पना 13. अत्याचार 14. जंगल 15. बाग़ का साया 16. फूल की छाँव 17. घर

अब तो ये दस्ते-तिही[1] काटना जाइज़[2] ठहरा
मुद्दतों से कई फैले हुए दामन देखूँ
मर गये तश्ना-दहन[3], जल गये खेतों के बदन
अब तो बरसात के इमकान[4] को रोशन देखूँ
कभी कोहसार में करता था मैं मादिन[5] की तलाश
अब जमीनों में भी, सीनों में भी आहन[6] देखूँ
मुझ पे है शेख की तकरीम[7] तो लाज़िम लेकिन
उसे नजदीक से देखूँ तो बरहमन देखूँ
इतना चस्का मुझे इफ़्शाए-हकीक़त[8] का पड़ा
आस्मानों में भी रौजन-पसे-रौजन[9] देखूँ

तीन

हाथ में तेशा[10] है या नुस्खा कोई अकसीर[11] का
कम नहीं होता खँडर में भी जुनूँ तामीर[12] का
चंद झंकारें थीं जिनकी गूँज थी आफ़ाक़-गीर[13]
और क्या सरमाया होता खानए-जंजीर का[14]
दिल से लब तक हर्फ़ का सारा सफ़र बरजख[15] में है
शौक हकगोई[16] का, लेकिन खौफ़[17] है तकफ़ीर[18] का
भेद यह मुझ पर खुला इस शह्‌रे-इज्जतमंद[19] में
बेगुनाही भी है इक पहलू मेरी तक़सीर[20] का
दर-हक़ीकत दिल में घर करना है परबत काटना
तुमने अफ़साना बना डाला है जूए-शीर[21] का
ख्वाब देखा था कि हम अफ़सूँ[22] की जद[23] में आये थे
उम्र-भर फिर ख्वाब देखा ख्वाब की ताबीर का

1. खाली हाथ 2. उचित 3. प्यासे 4. संभावना 5. खनिज 6. लोहा 7. आदर 8. यथार्थ को खोलना 9. छेद के पीछे छेद 10. कुदाल 11. अचूक 12. निर्माण 13. संसार में फैली हुई 14. जंजीर के घर की और क्या पूँजी होती 15. मरने से कयामत तक का समय 16. सच्ची बात कहना 17. डर 18. मुसलमान पर कुफ्र का फ़तवा लगाना 19. प्रतिष्ठित लोगों का शहर 20. दोष 21. दूध की नहर 22. जादू 23. निशाना

शब[1] तसव्वुर[2] ने तेरी यादों की जब तजसीम[3] की
एक झोंके पर भी धोखा-सा हुआ तस्वीर का
हिज्र से मौसूम[4] कर ली अपनी कोताही 'नदीम'
और भला-सा नाम उसको दे दिया तक़दीर का

चार

न शिकस्ता हर्फ़[5] हैं अजनबी, न फ़िगार लफ़्ज[6] पराये हैं
वही ग़म हैं मेरी मताए-फ़न[7], मेरे तज्रिबे[8] में जो आये हैं
गो सफ़र तो धूप नगर का है, यह तिलिस्म हुस्ने-नजर[9] का है
कहीं छाँव क़ुर्बे-जमाल[10] की, कहीं फ़ैज़े-इश्क़[11] के साये हैं
तेरी एक जुंबिशे-चश्म[12] से हुईं नग़मा-नग़मा[13] बसारतें[14]
हुईं गुंचा-गुंचा समाअतें[15], जरा लब जो तूने हिलाये हैं
तू गया तो बज़्मे-ख़याल[16] से तेरे ख़द्दो-ख़ाल[17] कहाँ गये,
मेरे फूल किसने जलाये हैं, मेरे चाँद किसने बुझाये हैं
तेरा इंतज़ार नहीं रहा, तेरा एतबार नहीं रहा
मेरे एतिमाद[18] की शाख़ से ये तयूर[19] किसने उड़ाये हैं
मेरे शौक़ पर यह गिरिफ़्त[20] क्यों, ऐ ख़ुदा, यह नफ़िए-सिरिश्त[21] क्यों
यह वह नश्शा[22] है जिसे आदमी तेरे आस्माँ से लाये हैं
जो ख़ला[23] के जब्र[24] में क़ैद था, वह ख़ला के पार निकल गया
जो गिरा था बामे-बिहिश्त[25] से, ये हिसार[26] उसी ने गिराये हैं

---

1. रात 2. कल्पना 3. शरीर का रूप देना 4. नाम रखा हुआ 5. टूटे हुए अक्षर 6. घायल शब्द 7. कला की पूँजी 8. जानकारी 9. दृष्टि की अच्छे-बुरे की परख 10. रूप की निकटता 11. प्यार का उपकार 12. आँख की हरकत 13. सुरीली आवाज 14. दृष्टि 15. सुनने की शक्तियाँ 16. कल्पना की महफ़िल 17. गाल और तिल 18. विश्वास 19. पक्षी 20. पकड़ 21. प्रकृति के प्रतिकूल बात, प्रकृति का खंडन 22. नशा 23. अंतरिक्ष 24. अत्याचार 25. स्वर्ग की छत 26. घेरा

अहमद फ़राज़

एक

नामुरादी का यह आलम भी तो ऐ दिल न रहे
हम तो अब तर्के-तअल्लुक़[1] के भी क़ाबिल न रहे
बज़्मे-मक़्तल[2] जो सजे कल तो यह इमकान[3] भी है
हम-से बिस्मिल[4] तो रहें आप-सा क़ातिल न रहे
यूं तो हर शख़्स है अंदेशए-रहज़न[5] का असीर[6]
कारवां नीयते-रहबर[7] से भी ग़ाफ़िल[8] न रहे
आज उसने शरफ़े-हमसफ़री[9] बख़्शा था
इस तरह से कि मुझे ख़्वाहिशे-मंज़िल न रहे
सामने तू हो तो सौ ख़्वाहिशें जाग उठती हैं
काश अबके मेरी आंखों में मेरा दिल न रहे
जो भी हो साहिबे-महफ़िल[10] वही कहता है 'फ़राज़'
कि वह उठ जाये जो महफ़िल से तो महफ़िल न रहे

दो

हुई है शाम तो आंखों में बस गया फिर तू
कहां गया है मेरे शह्र के मुसाफ़िर तू
बहुत उदास है इक शख़्स तेरे जाने से
जो हो सके तो चला आ उसी की ख़ातिर तू
मेरी मिसाल कि इक नख़्ले-ख़ुश्के-सहरा[11] हूं
तेरा ख़याल कि शाखे-चमन का ताइर[12] तू

---

1. संबंध तोड़ना 2. कत्ल करने की महफ़िल 3. संभावना 4. ज़ख्मी 5. लुटेरे का भय 6. बंदी 7. पथ-प्रदर्शक का आशय 8. असावधान 9. यात्रा में साथ देने का सम्मान 10. सभापति 11. जंगल का सूखा पेड़ 12. पक्षी

मैं जानता हूँ कि दुनिया तुझे बदल देगी
मैं मानता हूँ कि ऐसा नहीं बज़ाहिर[1] तू
हँसी-ख़ुशी से बिछड़ जा अगर बिछड़ना है
यह हर मक़ाम[2] पे क्या सोचता है आख़िर तू
'फ़राज़' तूने उसे मुश्किलों में डाल दिया
ज़माना साहिबे-ज़र[3] और सिर्फ़ शाइर तू

तीन

नज़र बुझी तो करिश्मे[4] भी रोज़ो-शब[5] के गये,
कि अब तलक नहीं आये हैं लोग जबके गये
करेगा कौन तेरी बेवफ़ाइयों का गिला
यही है रस्मे-ज़माना[6] तो हम भी अबके गये
मगर किसी ने हमें हमसफ़र नहीं जाना
यह और बात कि हम साथ-साथ सबके गये
अब आये हो तो यहाँ क्या है देखने के लिए
यह शह्‌र कब से है वीराँ, वे लोग कबके गये
गिरिफ़्तः-दिल[7] थे मगर हौसला न हारा था
गिरिफ़्तः-दिल हैं मगर हौसले भी अबके गये
तुम अपनी शम्अ-ए-तमन्ना[8] को रो रहे हो 'फ़राज़'
उन आँधियों में तो, प्यारे, चिराग़ सबके गये

चार

क़ुर्बतों[9] में भी जुदाई के ज़माने माँगे
दिल वह बेमेह्‌र[10] कि रोने के बहाने माँगे
हम न होते तो किसी और के चर्चे होते
ख़िल्क़ते-शह्‌र[11] तो कहने को फ़साने माँगे
यही दिल था कि तरसता था मरासिम[12] के लिए
अब यही तर्के-तअल्लुक़[13] के बहाने माँगे

---

1. देखने में 2. जगह 3. धनवान 4. अनोखापन 5. दिन-रात 6. समय की परंपरा 7. उदास 8. कामना का दीप 9. मिलन की घड़ियाँ 10. निर्दय 11. शहर के लोग 12. संबंध 13. संबंध तोड़ना

मैं वह महरूम[1] कि जैसे कोई वीराना हो
तू वह ख़ुशफ़हम,[2] ख़राबों[3] से ख़ज़ाने माँगे
अपना यह हाल कि जी हार चुके, लुट भी चुके
और मोहब्बत वही अंदाज़ पुराने माँगे
ज़िंदगी, हम तेरे दाग़ों से रहे शर्मिंदा
और तू है कि सदा आईनाख़ाने[4] माँगे
दिल किसी हाल पे क़ाने' ही नहीं जाने-'फ़राज़'[5]
मिल गये तुम भी तो क्या और न जाने माँगे

पाँच

ख़ामोश हो क्यों, दादे-जफ़ा[6] क्यों नहीं देते
बिस्मिल[7] हो तो क़ातिल को दुआ क्यों नहीं देते
वहशत का सबब रौज़ने-ज़िंदाँ तो नहीं है[8]
मिह्‌रो-महो-अंजुम[9] को बुझा क्यों नहीं देते
इक यह भी तो अंदाज़े-इलाजे-ग़मे-जाँ[10] है
ऐ चारागरो[11], दर्द बढ़ा क्यों नहीं देते
मुंसिफ़[12] हो अगर तुम तो कब इंसाफ़ करोगे
मुजरिम[13] है अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते
रहज़न[14] हो तो हाज़िर है मताए-दिलो-जाँ[15] भी
रहबर[16] हो तो मंज़िल का पता क्यों नहीं देते
साये हैं अगर हम तो हो क्यों हम से गुरेज़ाँ[17]
दीवार अगर है तो गिरा क्यों नहीं देते
क्या बीत गयी अबके 'फ़राज़' अह्‌ले-चमन[18] पर
याराने-क़फ़स[19] मुझको सदा क्यों नहीं देते

---

1. निराश 2. किसी की ओर से अच्छा विचार रखने वाला 3. खँडहर 4 शीशाघर 5. फ़राज़ के प्राण 6. अत्याचार की प्रशंसा 7. ज़ख़्मी 8. भय का कारण क़ैदख़ाने का छेद तो नहीं है 9. सूरज-चाँद-सितारे 10. प्राण के दुख की चिकित्सा का तरीक़ा 11. ऐ चिकित्सको 12. न्यायकर्ता 13. दोषी 14. लुटेरा 15. दिल और जान की पूँजी 16. पथ-प्रदर्शक 17. बचकर निकल जाने वाला 18. बाग़ में रहने वाले 19. क़ैदख़ाने के साथी

अहमद मुश्ताक़

कहीं उम्मीद-सी है दिल के निहांख़ाने में
अभी कुछ वक़्त लगेगा इसे समझाने में
मौसमे-गुल हो कि पतझड़ हो, बला से अपनी
हम कि शामिल हैं न खिलने में न मुरझाने में
हम से मख़्फ़ी[1] नहीं कुछ रहगुज़रे-शौक़[2] का हाल
हमने इक उम्र गुज़ारी है हवा खाने में
है यूं ही घूमते रहने का मज़ा ही कुछ और
ऐसी लज़्ज़त न पहुँचने में न रह जाने में
नये दीवानों को देखें तो ख़ुशी होती है
हम भी ऐसे ही थे जब आये थे वीराने में
मौसमों का कोई महरम[3] हो तो उससे पूछूँ
कितने पतझड़ अभी बाक़ी है बहार आने में

---

1. छुपा हुआ 2. अभिलाषा का रास्ता 3. राजदार

अहमद हमदानी

न जाने आज यह किसका खयाल आया है
ख़ुशी का रंग लिये हर मलाल आया है
वह एक शख़्स कि हासिल न था जो ख़ुद को भी
मिटा किसी पे तो कैसा वहाल आया है
ज़बाँ पे हर्फ़े-तलब[1] भी नहीं कोई, फिर भी
निगाहे - दोस्त में रंगे-जलाल[2] आया है
किया न ज़िक्र भी जिसका तमाम उम्र कभी
हमारे काम बहुत वह मलाल आया है
नहीं है तुमसे कोई दोस्ती भी अब तो मगर,
क़दम-क़दम पे यह कैसा वबाल[3] आया है

1. इच्छा की बात 2. क्रोध का रंग 3. झंझट

आरिफ़ अब्दुल मतीन

एक

गुलाब रुत में चमन से गुजर रहा हूँ मैं
मेरे जिलौ[1] में हैं रंग और बू, सबा[2] हूँ मैं
हुए हैं मुझसे नुमायाँ[3] तेरे वदन के खुतूत[4]
जो चुस्त है तेरे पैकर[5] पे, वह क़बा[6] हूँ मैं
मेरे खयाल में उड़ती हैं तितलियाँ हरसू[7],
हर आन उनके तअक़्क़ुब[8] में भागता हूँ मैं
यह आरज़ू है कि, सहराओं[9] पर बरस जाऊँ
समंदरों से जो उठी है, वह घटा हूँ मैं
खिराम[10] से मुझे पहचान, मेरे रूप न देख,
कहीं सबा[11], कहीं सरसर[12], कहीं हवा हूँ मैं
मेरे हुनर का यह एजाज[13] है कि हर ग़म को
तेरे जमाल[14] के साँचे में ढालता हूँ मैं
मेरे वुजूद का आशोव जाँगुसिल है बहुत[15]
खुद अपने होने की 'आरिफ़' कड़ी सज़ा हूँ मैं

दो

तू अपनी आँख का आँसू कभी बना मुझको
मिलूँ न खाक में, पलकों पे यूँ सजा मुझको

1. हमराही 2. हवा 3. स्पष्ट 4. रेखाएँ 5. शरीर 6. चोगा, लंबी पोशाक 7. चारों ओर 8. पीछे 9. रेगिस्तान 10. गति 11. ठंडी, मृदुल और मधुर हवा 12. आँधी 13. चमत्कार 14. रूप 15. मेरे अस्तित्व की हलचल बहुत हृदय-विदारक है

तरस रहा हूँ मैं अपनी ही हमनशीनी[1] को
तू आईना है मेरे अक्स से मिला मुझको
मेरे वुजूद के चंदन से दो-जहाँ महकें
तू अपने प्यार के शोले ने यूँ जला मुझको
सहर के नर्म उजाले में ढलके मुझ पे बरस
अँधेरी शब में जो सो जाऊँ, यूँ जगा मुझको
अज़ल[2] से ता-ब-अबद[3] खुद को फैलता देखूँ
मेरी निगाह में तू इस क़दर बढ़ा मुझको
तेरे जमाल[4] की रानाइयों[5] का गीत हूँ मैं
जो हो सके तो मधुर लय में गुनगुना मुझको

तीन

मैं भरी दुनिया में रहता था, मगर तनहा[6] भी था,
मुझको निस्बत थी हक़ाइक[7] से, मैं खुद सपना भी था
पौ फटे पहलू में तेरे आँख मेरी लग गयी,
नींद का प्यासा भी था, मैं रात का जागा भी था
मुझ पे कब यूँ ही खुले असरार[8] तेरी जात[9] के,
मैंने देखा ही न था, तुझको बहुत सोचा भी था
मुतमइन[10] कब था तू अपने खालो-खद[11] को देखकर
अक्स तेरा आईने से बेतरह उलझा भी था
मुद्दतों दिल के सुकूँ की आस पर ढूंढा तुझे
देखकर तुझको मुक़ाबिल दिल मगर धड़का भी था
यह अलग इक बात है दुनिया से ओझल ही रहा
वरना जो दिल में निहाँ[12] था, आँख से झलका भी था

---

1. साथ उठना-बैठना 2. अनादिकाल 3. अनंतकाल तक 4. रूप 5. छटा 6. अकेला 7. हकीक़त का बहु० =यथार्थता 8. भेद 9. व्यक्तित्व 10. संतुष्ट 11. गाल और तिल 12. छुपा हुआ

इक़बाल साजिद

दह्र[1] के अंधे कुएँ में कसके आवाजा लगा
कोई पत्थर फेंककर पानी का अंदाजा लगा
ज़हन[2] में सोचों का सूरज बर्फ़ की सूरत न रख
कुहर के दीवारो-दर पर धूप का ग़ाज़ा लगा
रात भी अब जा रही है अपनी मंजिल की तरफ़
किसकी धुन में जागता है,घर का दरवाजा लगा
काँच के बरतन में जैसे सुर्ख कागज़ का गुलाब
वह मुझे उतना ही अच्छा औरतरो-ताजा लगा
प्यार करने भी न पाया था कि रुस्वाई मिली
जुर्म से पहले ही मुझको संगे-ख़म्याज़ा[3] लगा
शहर की सड़कों पे अंधी रात के पिछले पहर,
मेरा ही साया मुझे रंगों का शीराज़ा[4] लगा
जाने रहता है कहाँ 'इकबाल साजिद' आजकल,
रात-दिन देखा है उसके घर का दरवाजा लगा

1. काल 2. बुद्धि 3. करनी के फल का पत्थर 4. क्रम

इफ़्तिख़ार नसीम

इस तरह सोयी हैं आँखें जागते सपनों के साथ
ख्वाहिशें लिपटी हों जैसे बंद दरवाज़ों के साथ
रात भर होता रहा है उसके आने का गुमाँ[1]
ऐसे टकराती रही ठंडी हवा परदों के साथ
एक लम्हे[2] का तअल्लुक उम्र-भर का रोग है
दौड़ते फिरते रहोगे भागते लम्हों के साथ
मैं उसे आवाज देकर भी बुला सकता न था
इस तरह टूटे जुबाँ के राब्ते[3] लफ़्जों के साथ
एक सन्नाटा है, फिर भी हर तरफ़ इक शोर है
कितने चेहरे आँख में फैले हैं आवाजों के साथ
जानी-पहचानी है बातें, जाने-बूझे नक़्श हैं
फिर भी मिलता है वह सबसे मुख्तलिफ़[4] चेहरों के साथ
दिल धड़कता ही नहीं है उसको पाकर भी 'नसीम'
किस क़दर मानूस[5] है यह, नित नये सदमों के साथ

---

1. भ्रम 2. क्षण 3. सपर्क 4. विभिन्न 5. परिचित

इब्ने इंशा

एक

सानेहा[1] हम पे यह पहला है मेरी जाँ कोई
ऐसे दामन से मिलाता है गिरेबाँ कोई
क़ैस साहब का तो इस ग़म में अजब हाल हुआ
अपने रस्ते में न पड़ता हो बयाबाँ कोई
हम ने अपने को बहुत देर सँभाला होता,
आज ही निकले अगर आँसू सरे-मिजगाँ[2] कोई
यारो, इस दर्दे-मोहब्बत की दवा बतलाओ
ढूँढ लेंगे ग़मे-दौराँ का तो दरमाँ[3] कोई
यक नजर देखना, रम[4] करना, हवा हो जाना
उनसे छूटी है भला ख़ूए-ग़ज़ालाँ[5] कोई
हम किसी सम्त भी निकले हों, वहीं जा निकले
हमसे भूली है रहे-कूचए-जानाँ[6] कोई
अब तेरी याद में रोयेंगे, न हैराँ होंगे
उनसे पैमाँ[7] है कोई, दिल से है पैमाँ कोई
सूनी रातों में सरे-बिस्तरे-ख्वाबे-राहत[8]
बैठा रहता है किसी बात पे गिरयाँ[9] कोई
भीगी शामों में, खुले सहन में तनहा-तनहा
बेक़राराना[10] ही देखा है ख़रामाँ[11] कोई
दोस्तो, दोस्तो, उस शख्स को जाकर समझाओ
अपने इंशा के सँभलने का भी सामाँ कोई

---

1. दुर्घटना 2. पलकों के किनारे 3. चिकित्सा, इलाज 4. लुभाना 5. सुंदरियों का स्वभाव 6. प्रेमिका की गली का रास्ता 7. वचन 8. मीठी नींद के बिस्तर के सिरहाने 9. रोता हुआ 10. व्याकुल 11. टहलते हुए

यह भी हम लोगों की वहशत पे हँसा करता था
आया इस खान-ए-वीरां[1] में भी मेहमां कोई

दो

गोरी अब तू आप समझ ले हम साजन या दुश्मन हैं,
गोरी, तू है जिस्म हमारा, हम तेरा पैराहन हैं
नगरी-नगरी घूम रहे हैं, सखियो[2] अच्छा मौक़ा है
रूप-सरूप की भिक्षा दे दो, हम इक फैला दामन हैं
तेरे चाकर होकर पाया दर्द बहुत, रुस्वाई बहुत,
तुझसे थे जो टके कमाये आज तुझी को अरपन हैं
लोगो, मैले तन-मन-धन की हमको सख़्त मनाही है
लोगो, हम इस छूत से भागें, हम तो खरे बिरहमन हैं
पूछो खेल बनानेवाले, पूछो खेलनेवाले से,
हम क्या जानें किसकी बाजी, हम जो पत्ते बावन हैं

1. उजाड़ घर 2. दानी लोगो

इरफ़ाना अज़ीज़

एक

दिल पर गहरा नक़्श है साथी लाख तेरी दानाई[1] का
सात समंदर भी तो न पायें राज़ मेरी गहराई का
चश्मए-ख़ूं[2] में डूब गयी बारात सुहाने तारों की
बोझल पलकों पर गहनाया चांद मेरी तनहाई का
झूम रहे है काले बादल दरस की प्यासी आंखों में
काजल बनकर फैल गया है दाग़ मेरी रुस्वाई का
कितना है आनंद तेरे इस धीमे-धीमे लहजे में
तेरे धीरज से निखरा है रंग मेरी रानाई[3] का
मेरे दिल से पूछे कोई क़द्र उभरते सूरज की
मेरी आंख से देखे कोई रूप मेरे सौदाई का
संदल जैसी रंगत पर क़ुरबान सुनहरी धूप करूँ
रोशन माथे पर मैं वारूँ सारा हुस्न ख़ुदाई का
मेरा बिखरा-बिखरा तन-मन सिमट गया किस चाहत से
जान गयी हूँ भेद मैं तेरी बाँहों की गीराई[4] का

दो

चिराग़े-फ़िक्र[5] जलाया है रात-भर हमने
और उसके बाद निखारा रुखे-सहर[6] हमने
हमें शऊर ने धोखे दिये है रह-रहकर
फ़रेब खाये है दानिस्ता[7] बेशतर[8] हमने

---

1. चतुरता 2. ख़ून की नहर 3. सुंदरता 4. पकड़ 5. सोच का दीप 6. सुबह का मुंह 7. जान-बूझकर 8. ज़्यादातर

सिला खिरद[1] का ज़माने में जामे-ज़हर[2] सही
निखार दी है मगर अज़मते-बशर[3] हमने
नज़र हो दौलते-हर-दो-जहाँ[4] पे क्या माइल[5]
समेट ली है बहुत दौलते-नज़र हमने
सदाए-पा[6] की सुनी बाज़गश्त[7] ही हर गाम,
तलाश की है जहाँ तेरी रहगुज़र हमने
निगारे-गुल[8] ने लिया नाम ज़ेरे-लब[9] तेरा
उदास, चाँद को देखा पसे-शजर[10] हमने

तीन

नील गगन पर सुर्ख़ परिंदों की डारों के संग,
बदली बनकर उड़ती जाये मेरी शोख़ उमंग
कोमल कलियों जैसा मेरा पाक पवित्र शरीर
पवन के छूने से उड़ जाता है चेहरे का रंग
सपनों की डाली पर चमका एक सुनहरा पात
चढ़ता सूरज देखके जिसका रूप हुआ है दंग
जलते-बुझते फूलों से उतरी ख़ुशबू की राख
धोकर आग जो ओस ने देखा अंगारों का रंग
ताने देकर लोग लगाते हैं क्यों आग में आग
बस्तीवाले क्यों करते है बैरागन को तंग

1. बुद्धि 2. ज़हर का जाम 3. मनुष्य की बड़ाई 4. दोनों लोकों की दौलत 5. आकर्षित 6. पद-चाप 7. प्रतिध्वनि 8. फूल की प्रतिमा 9. दबे स्वर में 10. पेड़ के पीछे

एहसान दानिश

एक

इतना कहाँ है ज़र्फ़[1] समेटूँ ये किश्ते-दर्द[2]
अपना सा एहतिमामे-खुदाई[3] न दे मुझे
मैं किरचियाँ समेट कर जोड़ूँगा कब तलक
तोड़ा है मुझसे लेके जो आईना दे मुझे
इस आफ़ताबे-दानिशे-नौ[4] से मुझे बचा
जिस रोशनी में राह सुझायी न दे मुझे
मैं हूँ अर्क़-अर्क़, मेरे तलवे लहू-लहू
इतनी सज़ाए-आबलापाई[5] न दे मुझे
गुस्ताख़ मैं नहीं हूँ जो आवाज़ हो बलंद
उस दर पे इत्तहामे-गदाई[6] न दे मुझे
आयें नज़र जहाँ से ज़मीनें धुआँ-धुआँ
ऐसी बलंदियों पे रसाई न दे मुझे
सुनता हूँ ढक लिया है समंदर को बर्फ़ ने,
यारब अभी गहन से रिहाई न दे मुझे
मेरी नज़र का नुक़्स है या आईना ख़राब
'दानिश' वह दिल में रहके दिखायी न दे मुझे

दो

आईना है तो अपनी सफ़ाई न दे मुझे
मुमकिन नहीं कि अक्स दिखायी न दे मुझे

---

1. सहनशीलता 2. दुख के खेत 3. संसार की देख-रेख 4. नयी अक्ल का सूरज 5. पैरों में छालों की सज़ा 6. भीख माँगने का आरोप

सैय्याद अब बहार, न बरखा, न फूल बन
ऐसे में इज्ने - नग़्मा - सराई[1] न दे मुझे
बरपा है खल्वतों[2] में भी नीलामघर का शोर
ये लोग हैं बड़े तो बड़ाई न दे मुझे
तेरा सुबूत है तेरी खुशबू मगर यह क्या
तू सामने हो और दिखायी न दे मुझे
जो बेबसर हैं उनको बसीरत[3] कहाँ से दूँ
इस क़ाफ़िले में राहनुमाई न दे मुझे
यह भी ग़लत नहीं कि अगर तू हो रूबरू
हो शोरे - हश्र[4] भी तो सुनायी न दे मुझे
दिल की जो बात है वह जबाँ तक तो आ चुके
रुख़्सत न हो, यह ज़ख़्मे - जुदाई न दे मुझे
अफ़कारे-नौ[5] की क्यों न करूँ मंडियाँ तलाश,
जब कोई काश्तकार बटाई न दे मुझे
मर क्यों न जाऊँ जब यह समाअत[6] का हाल हो
दस्तक हो तेरी और सुनायी न दे मुझे
यह फ़िक्र है कि जिसके लिए तज दिये रफ़ीक़
इक-दिन वह दुश्मनों में दिखायी न दे मुझे

1. गाने का बुलावा 2. एकात 3. दिल की नजर 4. महाप्रलय का शोर 5. नयी चिंताएँ 6. सुनने की शक्ति

किश्वर नाहीद

एक

आगे सरक रहे है कि सक्ता[1] भी है अजब,
दीवारो - दर को शौक़-तमाशा भी है अजब
शायद उदास शाखों पे लेटा हुआ मिले
अपनी गली में उसका ठिकाना भी है अजब
गुंजान गहरे सब्ज दरख़्तों ने बाँट ली
वह तीरगी[2] कि जिसका उजाला भी है अजब
दीवारो - दर के रंग है आँखों पे जम गये
दहशत[3] से मर न जायें कि रस्ता भी है अजब
बिखरे हुरूफ़ जोड़के लिख दो कोई तो नाम
इस दिल के दुख अजब है मसीहा भी है अजब
मर्दों को सब रवा[4] है पै औरत को ना-रवा[5],
शर्मो - हया का शह्‌र में चर्चा भी है अजब
हर्फ़े - विसाल[6] हर्फ़े - गुमाँ[7] तक न बन सका
तहज़ीबे-जाँ[8] में ग़म का मुदावा[9] भी है अजब
भेजी है उसने फूलों में मुँह - बंद सीपियाँ
इंकार भी अजब है, बुलावा भी है अजब

दो

हम कि मग़लूबे - गुमाँ[10] थे पहले
फिर वहीं है कि जहाँ थे पहले

---

1. सन्नाटा 2. अंधकार 3. भय 4. उचित 5. अनुचित 6. मिलन की बात 7. भ्रम (कल्पना) की बात 8. जीवन की संस्कृति 9. इलाज 10. भ्रम से पराजित

ख़्वाहिशें झुर्रियाँ बनकर उभरीं
ज़ख्म सीने में निहाँ[1] थे पहले
अब तो हर बात पे रो देते हैं
वाक़िफ़े - सूदो - ज़ियाँ[2] थे पहले
दिल से जैसे कोई काँटा निकला
अश्क आँखों से रवाँ थे पहले
अब फ़क़त अंजुमन - आराई[3] है
ग़मवारे - दिलो - जाँ थे पहले
दोश[4] पे सर है कि है बर्फ़ जमी
हम कि शोलों की ज़ुबाँ थे पहले
अब तो हर ताज़ा सितम है तस्लीम,
हादसे[5] दिल पे गराँ थे पहले
मेरी हमज़ाद[6] है तनहाई मेरी,
ऐसे रिश्ते भी कहाँ थे पहले

तीन

तलब[7] की प्यास को फूलों में बाँट सकता था
वह ख़्वाब में भी मेरे लब पे ओस रखता था
उसे ख़बर थी मेरे मुज़्तरिब[8] बहानों की
वह हर्फ़गर[9] मेरे कानों में फूल बुनता था
उसे पलट के बुलाने का शौक़ भी था अजब
वह दायरों की तरह साहिलों पे चलता था
मैं कैसे ख़ुद को तराशूँ कि तुझको पा तो सकूँ
तेरी गली में तो सूरज भी छनके आता था
नमी से आँख की था दिल में ग़म तमन्ना का
तुम्हारा ग़म मेरी पलकों को तर तो रखता था

---

1. छुपे हुए 2. लाभ और हानि के जानकार 3. सभा की सजावट 4. कंधा
5. दुर्घटना 6. साथ पैदा हुई 7. इच्छा 8. अधीर 9. बात बनाने वाला

कहाँ से ढूँढूँ मैं उन सद-चिराग़[1] आँखों को
वह शख्स तो मेरा हर मूए-तन[2] समझता था
बिखर गया हर इक अंदेशए - फ़ना[3] 'नाहीद'
कि मेरा जामे - तमन्ना[4] छलकके भरता था

1. सैंकड़ों दीप 2. शरीर का बाल, रोम-रोम 3. मौत का भय 4. इच्छा का प्याला

ख़ातिर ग़ज़नवी

एक

गो ज़रा-सी बात पर बरसों के याराने गये
लेकिन इतना तो हुआ, कुछ लोग पहचाने गये
गर्मिए-महफ़िल फ़क़त इक नारए-मस्ताना है[1]
और वह खुश है कि इस महफ़िल से दीवाने गये
मैं इसे शोहरत[2] कहूँ या अपनी रुस्वाई[3] कहूँ
मुझसे पहले उस गली में मेरे अफ़साने गये
यूँ तो वह मेरी रगे-जाँ[4] से भी थे नज़दीक-तर[5],
आँसुओं की धुंद में लेकिन न पहचाने गये
वहशतें[6] कुछ इस तरह अपना मुक़द्दर हो गयी
हम जहाँ पहुँचे, हमारे साथ वीराने गये
अब भी उन यादों की खुशबू ज़ेह्न में महफ़ूज़[7] है
बारहा[8] हम जिनसे गुलज़ारों[9] को महकाने गये
क्या क़यामत है कि 'ख़ातिर' कुश्तए-शब[10] भी थे हम
सुब्ह भी आयी तो मुजरिम[11] हम ही गरदाने गये[12]

दो

उलझे-उलझे धागे-धागे से ख़यालों की तरह
हो गया हूँ इन दिनों तेरे सवालों की तरह

---

1. सभा की चहल-पहल केवल एक मस्ती-भरा नारा है 2. प्रसिद्धि 3. बदनामी 4. सबसे बड़ी ख़ून की रग जो दिल में जाती है 5. ज़्यादा क़रीब 6. त्रास 7. सुरक्षित 8. प्रायः 9. बाग़ों 10. रात का मारा हुआ 11. दोषी 12. माने गये

अपने दिल की वुसअतों[1] में हर तरफ़ भटका फिरा
बेकरां[2], मुव्हम[3] सरावों[4] में गज़ालों[5] की तरह
यह मेरा अहसास है या जब्रे-मौसम का असर
अब की रुत महके नहीं गुल पिछले सालों की तरह
अस्रे-हाज़िर[6] की जबीं पर तल्ख़ियां[7] कंदा[8] हुईं
तन गये हालात अपने गिर्द जालों की तरह
दश्ते-ग़म में आंधियों के वार सहने के लिए
ख़ुश्क पत्ते उठ रहे हैं आज ढालों की तरह
ज़ुल्मते-मग़रिब[9] को 'ख़ातिर' कोई यह पैग़ाम दे
हम भी अब उभरेंगे मशरिक़[10] से उजालों की तरह

तीन

राज़े-दिल[11] जो तेरी महफ़िल में भी इफ़शा न हुआ[12],
या सरे-दार[13] हुआ या सरे-मैख़ाना हुआ
एक हम हैं कि तसव्वुर की तरह साथ रहे
एक तू है कि जो ख़ल्वत[14] में भी तनहा[15] न हुआ
क्या भरोसा है तेरे लुत्फ़ो-करम[16] का ऐ दोस्त
जिस तरह सायए-दीवार[17] हुआ या न हुआ
शबनमिस्तां[18] में उतर आयी थी सूरज की किरन
आईनाख़ानए-गुल[19] था कि सनमख़ाना[20] हुआ
इस क़दर रंज सहे दिल ने वफ़ा में 'ख़ातिर'
आज वह हमसे जो बिछड़े भी तो सदमा न हुआ

---

1. विस्तार 2. असीम 3. अस्पष्ट 4. मृगतृष्णा 5. हिरन 6. वर्तमान काल 7. कटुताएँ 8. अंकित 9. पश्चिम के अंधकार 10. पूरब 11. मन का भेद 12. न खुला 13. फाँसी के तख़्ते पर 14. एकांत 15. अकेला 16. करुणा और दया 17. दीवार की छाँव 18. ओस का घर 19. फूल का शीशाघर 20. प्रेमिका का घर

ख़ालिद अहमद

एक

लहू की धार ने तन रोशनी में ढाल दिये,
सरों के साथ हवा में दिये उछाल दिये
तुलूए-दर्द का लम्हा कहाँ गुरुब हुआ[1],
बनामे-ज़ीस्त हमें ज़ुल्मतों के साल दिये[2]
शऊर[3] देके हमें बेशऊर कहने को,
दिलों से खोलके ताले लबों पे डाल दिये
हर एक सब्र[4] पयामे-सकूत[5] थी हमको
हर इम्तहान में तूने अजब सवाल दिये
दरे-तज़ाद[6] पे क़ुफ़्ले-जवाज़[7] क्या लगता
बरंगे-सुब्ह अँधेरों ने घर उजाल दिये
तेरी रुतों ने हमें चाँदनी समेटने को,
हवा से हाथ दिये, बादलों से जाल दिये
वे नक़्श एक मोहब्बत के अक्स थे 'ख़ालिद'
वे रंग अब तेरी तस्वीर से निकाल दिये

दो

मू-क़लम[8] हल्क़ए-ज़ंजीर[9] कहाँ होते हैं
नक़्श तुझसे सरे-तसवीर कहाँ होते हैं
शह्र की धूल सिमट आती है क्यों आँखों में
कुछ तो कह, अब तेरे दिलगीर कहाँ होते हैं

1. दर्द के उदय होने का क्षण कहाँ डूबा 2. ज़िन्दगी के नाम से हमें अँधेरों के साल दिये 3. विवेक 4. धैर्य 5. मौन संदेश 6. प्रतिकूलता का दरवाज़ा 7. औचित्य का ताला 8. चित्रकार की तूलिका 9. ज़ंजीर की कड़ी

सर को घुटनों पे धरे कौन कभी बैठा था
हमसे वहशी यूँ ही जंजीर कहाँ होते हैं
वे नगर जिनको जगह दे न खयालों की जमीं
वे हक़ीक़त में भी तामीर कहाँ होते हैं
लफ़्ज मफ़हूम[1] की तनहाई के उरियाँ क़ैदी
लफ़्ज मिन्नतकशे-तफ़सीर कहाँ होते हैं[2]
ख्वाब तो देखने वालों के हुनर हैं 'खालिद'
ख्वाब तो दर-पए-तावीर[3] कहाँ होते हैं

तीन

मैं कल का आदमी हूँ, मुझे कल पे टाल दे
ऐ दिन, मुझे जवाल[4] की हद से निकाल दे
वह टीस जाग-जागके पहलू में सो गयी
वह टीस जो कि लाख दिलों को उजाल दे
अंग - अंग चूम-चूम के ढूंढूं जवाब मैं
हर शब मेरे लबों को वह ऐसे सवाल दे
ऐ अस्र[5], मेरे अस्र से आगे निकलके देख
ऐ रब्बे-जुलजलाल[6], दुखों को जमाल दे
ऐ गर्दिशे - नुजूम[7], पसे-गर्दिशे-नुजूम[8]
हर सुब्हे - इंतज़ार को शामे-विसाल[9] दे

1. अर्थ 2. शब्द व्याख्या के आभारी कहाँ होते हैं 3. स्वप्नफल के इच्छुक 4. पतन 5. काल 6. हे परमात्मा 7. ऐ सितारों(भाग्य)के चक्कर 8. सितारों के चक्कर के बाद 9. मिलन की साँझ

ग़ुलाम जीलानी 'असग़र'

एक

तू अंग-अंग में खुशबू-सी बन गया होगा
मैं सोचता हूँ कि तुझसे गुरेज़[1] क्या होगा
तमाम रात मेरे दिल से आँच आती रही
कहीं क़रीब कोई शह्‌र जल रहा होगा
तू मेरे साथ भी रहकर मेरे क़रीब न था
अब इससे और फ़ुज़ूँ[2] फ़ासला भी क्या होगा
मुझे खुद अपनी वफ़ा पर भी एतमाद[3] नहीं
कभी तो तू भी मेरी तरह सोचता होगा
कभी तो संगे-मलामत[4] कहीं से आयेगा,
कोई तो शहर में अपना भी आशना होगा
ज़रा-सी बात पे क्या दोस्तों के मुँह आयें
ग़रीब दिल था, मुरव्वत में जल-बुझा होगा

दो

मौजे-सरसर[5] की तरह दिल से गुज़र जाओगे
किसको मालूम था तुम दिल में उतर जाओगे
चार सू[6] वक़्त की गर्दिश की फ़सीले-शब[7] है
बचके इस गर्दिशे-दौरां मे किधर जाओगे
आईनाख़ाने से दामन को बचाकर गुज़रो
आईना टूटा तो रेज़ों में बिखर जाओगे

---

1. उपेक्षा 2. अधिक 3. विश्वास 4. निंदा का पत्थर 5. आँधी की तेज़ी 6. चारों ओर 7. रात का घेरा

इक जरा और क़रीबे-रगे-जाँ[1] आओ तो
मेरे ख़ूंनाव[2] में तुम ढलके सँवर जाओगे
देखो वह चाँद सिसकता है उफ़ुक़[3] की हद पर
तुम भी उस चाँद की मानिंद गुजर जाओगे
इस भरी बज़्म[4] से हँस-बोलके रुख़्सत हो लो
कल जो उठोगे तो बा-दीदा-ए-तर[5] जाओगे

---

1. ख़ून की उस रग के करीब जो दिल में जाती है 2. ख़ून के आँसू
3. क्षितिज 4. सभा 5. आँसू-भरी आँखें लेकर

दास्ताँ खत्म न होगी कभी चेहरों की 'जमील'
हुस्ने-यूसुफ़ तो कभी इश्क़े-ज़ुलैखा चेहरे

दो

मैं तो तनहा[1] था मगर तुझ को भी तनहा देखा
अपनी तसवीर के पीछे तेरा चेहरा देखा
जिस की खुशबू से महक जाये शबिस्ताने विसाल[2]
दोस्तो, तुमने कभी वह गुले-सहरा[3] देखा
अजनबी बनके मिले, दिल में उतरता जाये,
शह्र में कोई भी तुझ-सा न शनासा[4] देखा
अब तो बस एक ही ख्वाहिश है कि तुझको देखें
सारी दुनिया में फिरे और न क्या-क्या देखा
कोई सूरत भी शनासा नज़र आयी न हमें
घर से निकले तो अजब शहर का नक़्शा देखा
इस क़दर धूप थी सँवला गये रख़्शाँ[5] चेहरे
जलते सूरज का मगर रंग भी पीला देखा
पेड़ का दुख तो कोई पूछने वाला ही न था
अपनी ही आग में जलता हुआ साया देखा
थे अँधेरों के तअक़्क़ुब में उजाले क्या-क्या
खुद तमाशा थे 'जमील' और तमाशा देखा

तीन

सुर्खिए-शाम ने यूँ फूल बिखेरे दिल में
जैसे चुपके से उतर आयें सवेरे दिल में
हम तो सदियों से यूँ ही गोश-बर-आवाज़[6] रहे
जाने तू कौन है क्या राज़ है तेरे दिल में
पास शब भर कोई खुरशीद-सिफ़त[7] रहता है
दिन को तारे से उतर आते हैं मेरे दिल में

---

1. अकेला 2. रात्रि को मिलने की जगह 3. जंगली फूल 4. परिचित 5. चमकते हुए 6. आवाज़ पर कान लगाये 7. सूरज जैसा

जमील मलिक

एक

महफ़िलें ख़त्म हुईं, रह गये तनहा चेहरे
वक़्त ने छीन लिये कितने शनासा[1] चेहरे
सारी दुनिया के लिए एक तमाशा चेहरे
दिल तो परदे में रहे, हो गये रुस्वा चेहरे
तुम वह बेदर्द कि मुड़कर भी न देखा उनको
वरना करते रहे क्या-क्या न तक़ाज़ा चेहरे
कितने हाथों ने तराशे ये हसीं ताजमहल,
झांकते हैं दरो-दीवार से क्या-क्या चेहरे
सोये पत्तों की तरह, जागती कलियों की तरह
ख़ाक में गुम तो कभी ख़ाक से पैदा चेहरे
ख़ुद ही वीरानी-ए-दिल, ख़ुद ही चिराग़े-महफ़िल
कभी महरूमे-तमन्ना,[2] कभी शैदा[3] चेहरे
ख़ाक उड़ती भी रही, अब्र बरसता भी रहा
हमने देखे कभी सहरा, कभी दरिया चेहरे
ऐशे-इमरोज[4] भी, हंगामए-फ़र्दा[5] भी यही,
पेश करते रहे, हर दौर का नक़्शा चेहरे
दीप जलते रहे हर ताक़ पे अरमानों के
कितनी सदियों से है हर घर का उजाला चेहरे
ख़त्म हो जाये जिन्हें देखके बीमारिए-दिल,
ढूंढ़कर लायें कहाँ से वह मसीहा चेहरे

---

1. परिचित 2. कामना से वंचित 3. किसी चीज की बहुत अधिक कामना
4. आज का विलास 5. आने वाले कल का हंगामा

दास्ताँ खत्म न होगी कभी चेहरों की 'जमील'
हुस्ने-यूसुफ़ तो कभी इश्क़े-जुलैखा चेहरे

दो

मैं तो तनहा[1] था मगर तुझ को भी तनहा देखा
अपनी तसवीर के पीछे तेरा चेहरा देखा
जिस की खुशबू से महक जाये शबिस्ताने विसाल[2]
दोस्तो, तुमने कभी वह गुले-सहरा[3] देखा
अजनबी बनके मिले, दिल में उतरता जाये,
शह्‌र में कोई भी तुझ-सा न शनासा[4] देखा
अब तो बस एक ही ख्वाहिश है कि तुझको देखें
सारी दुनिया में फिरे और न क्या-क्या देखा
कोई सूरत भी शनासा नजर आयी न हमें
घर से निकले तो अजब शहर का नक़्शा देखा
इस क़दर धूप थी सँवला गये रख़्शाँ[5] चेहरे
जलते सूरज का मगर रंग भी पीला देखा
पेड़ का दुख तो कोई पूछने वाला ही न था
अपनी ही आग में जलता हुआ साया देखा
थे अँधेरों के तअक़्कुब में उजाले क्या-क्या
खुद तमाशा थे 'जमील' और तमाशा देखा

तीन

सुर्खिए-शाम ने यूँ फूल बिखेरे दिल में
जैसे चुपके से उतर आयें सवेरे दिल में
हम तो सदियों से यूँ ही गोश-बर-आवाज[6] रहे
जाने तू कौन है क्या राज है तेरे दिल में
पास शब भर कोई खुरशीद-सिफ़त[7] रहता है
दिन को तारे से उतर आते हैं मेरे दिल में

1. अकेला 2. रात्रि को मिलने की जगह 3. जंगली फूल 4. परिचित
5. चमकते हुए 6. आवाज पर कान लगाये 7. सूरज जैसा

प्यार की लौ मे मुनव्वर है शबिस्ताने-विसाल[1]
आज तो आन मिले शाम-सवेरे दिल में

हम मुसाफिर है मोहब्बत की कठिन राहों के
थक भी जाते है तो करते है बसेरे दिल में

क्यों भटकता है, इधर आके जरा सुस्ता ले
इस तरफ़ धूप है, बादल है घनेरे दिल में

अपना सरमायए-फ़न फिर भी सलामत ही रहा[2]
कितनी ही बार 'जमील' आये लुटेरे दिल में

---

1. मिलन का कक्ष प्यार की लौ से प्रकाशमान है 2. अपनी कला की पूंजी फिर भी बची ही रही

जफ़र इक़बाल

एक

थकी हुई सी हवा में तरंग आने दे,
चमन से जा कहीं फूलों के रंग आने दे
जो बात करनी है मुश्किल तो आँख उठाके गुजर
खला[1] में ख्वाब, लहू में उमंग आने दे
इस आवशार[2] का रस्ता न रोक वहरे-खुदा,
झुलस रहा है मेरा अंग-अंग आने दे
दिलों से बेखबरी इस क़दर नहीं अच्छी
महाज़े-शौक़[3] से रूदादे-जंग[4] आने दे
पनाह माँगती फिरती है तुझसे खल्क़े-खुदा,
कोई मुझे भी अगर तुझ से तंग आने दे
तू अपने सित्र[5] की चादर बदन पे खेंचके रख
मेरी नज़र में तमन्ना का नंग आने दे
मैं खुद भी जीने से बेज़ार हूँ बहुत लेकिन
जरा ठहर मुझे मरने का ढंग आने दे
मताए-जुमला[6] से यह एक शै बची है 'जफ़र'
हज़ार हैफ़ अगर दिल पे जंग आने दे

दो

है यही उसकी रजा[7], जैसा भी था, जैसा भी है
सह्ल या दुश्वार है यह मरहला[8], जैसा भी है
देखना चाहो तो है, सुनना भी चाहो तो बहुत,
नक़्श[9] है, और साथ-साथ उसके सदा[10] जैसा भी है

1. अंतरिक्ष 2. झरना 3. अभिलाषा का युद्ध-क्षेत्र 4. युद्ध का हाल
5. पर्दा 6. कुल पूँजी 7. मनोकामना 8. कठिन काम 9. चित्र 10. आवाज़

मौज में आये तो दिखलाता है अपनी क़ुदरतें
खल्क़[1] से वाहर नहीं, लेकिन, खुदा जैसा भी है
वोलता है झूठ भी, रहता है सच से भी क़रीव
वातिलो-हक़ से वज़ाहिर मावरा जैसा भी है[2]
कुछ मोहव्वत में सियासत को भी रखता है रवा[3],
वह अगर ऐसा समझता है तो क्या, जैसा भी है
रुख वदलता जा रहा है उसकी सोचों का अगर
सोचना उसका भी हक़ है, सोचता जैसा भी है
वेवफ़ाई जव करेगा वह भी देखेंगे, 'ज़फ़र'
देख लो दो-चार दिन रंगे-वफ़ा जैसा भी है

तीन

फ़िक्र कर तामीरे-दिल[4] की वह यहीं आ जायेगा
वन गया जिस दिन मकाँ उस दिन मकीं[5] आ जायेगा
कौन-सा हम रोज-रोज उसको वुलाते हैं यहाँ
वे-मुरव्वत[6] है मगर इतना नहीं, आ जायेगा
हमसे मिल लेने का मतलव यह नहीं होगा कि अब
हर कोई उसको वुला ले, हर कहीं आ जायेगा
खुद भी वह चालाक है लेकिन अगर हिम्मत करो
पहला-पहला झूठ है उसको यक़ीं आ जायेगा
सरखुशी[7] का सिलसिला चलता रहेगा और फिर
दरमियाँ में फिर कोई हर्फ़े-हज़ीं[8] आ जायेगा
जख्मे-दिल तो सात परदों में छुपा होगा कहीं
और सवके सामने दाग़े-जवीं[9] आ जायेगा
हम तो समझे थे कि इस लश्कर-कशी[10] से हुस्न का
कुछ इलाका और भी जेरे-नगीं[11] आ जायेगा

1. मनुष्य 2. ऐसा जान पड़ता है कि वह सत्य और असत्य से परे भी है 3. प्रचलित, उचित 4. दिल का निर्माण 5. रहने वाला 6. निष्ठुर 7. हलका नशा 8. दुखदायक वात 9. माथे का दाग 10. आक्रमण 11. शासनाधीन।

अब तो जैसे खुद भी आना चाहता है वह 'जफ़र'
घर, गली, होटल, जहाँ चाहो वहीं आ जायेगा।

चार

उदासियों का कुछ ऐसा तिलिस्म[1] घर पे रहा
धुआँ-सा शौक़े-मुलाक़ात बामो-दर पे रहा
बराते-हिज्र[2] थी या ख़स्ता ख़्वाहिशों[3] का जलूस
दबा-दबा-सा कोई शोर, रहगुज़र[4] पे रहा
फ़सीदा-चश्म[5] हुए, आहे-बे-महार[6] पे हम
न एतराज हमें आस्तीने-तर[7] पे रहा
सिवाये-दिल[8] कई तुग़यानियों[9] से बच निकले
न इख़्तियार[10] हमारा इसी भँवर पे रहा
यह मेरे पाँव में ज़ंजीरे-आरज़ू[11] क्या थी
कि मैं क़ियाम[12] में ख़ुश था न मैं सफ़र पे रहा
यह किसकी सुब्ह मेरी रात से जुदा न हुई
यह किसका अक्स[13] मेरे हालए-हुनर[14] पे रहा
न खुलके देख सके हम न जान पाये उसे
कि इनहिसारे-तमाशा[15] फ़क़त नजर पे रहा
बला की धूप थी और शफ़क़तें[16] मोहब्बत की
कि तेरी याद का बादल हमारे सर पे रहा
तेरा ख़याल सलाखों से फोड़ता था जबीं[17]
वह वक़्त भी, मेरे प्यार तेरे 'ज़फ़र' पे रहा

---

1. जादू 2. विरह की बारात 3. घायल इच्छाओं 4. रास्ता 5. मलिन आँख 6. वह आह जिस पर हमारा बस न था 7. गीली आस्तीन 8. दिल के अलावा 9. सैलाबों 10. अधिकार 11. मनोकामना की ज़ंजीर 12. अस्थायी निवास 13. प्रतिबिंब 14. कला मंडल 15. देखने की निर्भरता 16. कृपा 17. माथा

जावेद शाहीं

एक

दिले-गिरिफ़्ता[1] के सब पेचो-ताब[2] खोलके देख
हवा का जोर, मुहीते-हुबाब[3] खोलके देख
मेरे लहू को नुमाइशगहे-वफ़ा से उठा,
है जमा-ओ-खर्च बहुत, यह हिसाब खोलके देख
यह किस तिलिस्म से हर शै है मिस्ले-संग[4] खमोश
ऐ नक़्शगर[5], दरे-शह्‌रे-खराब[6] खोलके देख
कहीं तो दश्त में ठहरेगी मौजे-आबे-गुरेज[7]
रवाँ हुआ है तो राजे-सराब[8] खोलके देख
धड़कते दिल से न मौजों[9] की रज़्म-गह[10] में उतर
खते-सफर[11] को कफ़े-दस्ते-आब[12] खोलके देख
है कब से तश्नए-मानी[13] मेरे हुरूफ़े-बदन[14]
फराग़[15] हो तो कभी यह किताब खोलके देख
जरा सुराग़[16] लगा मेरे रंगे-खस्ता[17] का
ग़मों की धूप में बंदे-नक़ाब[18] खोलके देख
गुलों को किसलिए डसती है चाँदनी रातें
कहाँ है जह्‌र, रगे-माहताब[19] खोलके देख
मजा तो जब है कि गुलशन में जश्ने-शोला[20] हो,
भरी बहार में दाग़े-गुलाब खोलके देख

---

1. दुखी मन 2. क्रोध 3. बुलबुले का फैलाव 4. पत्थर की तरह 5. नक़्काश 6. वीरान शहर का दरवाजा 7. तेज पानी की लहर 8. मृगतृष्णा का रहस्य 9. लहरों 10. युद्धक्षेत्र 11. यात्रा की रेखा 12. पानी के हाथ के झाग 13. अर्थ के प्यासे 14. शरीर के अक्षर 15. फुर्सत 16. खोज 17. दुर्दशा ग्रस्त 18. नकाब की गिरह 19. चाँद की नस 20. शोलों का उत्सव

कनारे - दश्ते - बला कौन है मकीं 'शाही'[1]
खमोश, सूनी हवेली का बाब[2] खोलके देख

दो

जो बर्फ़ज़ार[3] चीर दे, ऐसी किरन भी ला
पत्थर दिलों में आज कोई कोहकन[4] भी ला
इस तरह सरसरी मेरा बाबे-वफ़ा[5] न लिख
वक़्ते-शुमारे-ज़ख़्म[6], मेरा ख़स्ता-तन[7] भी ला
मुंसिफ़[8] अगर बना है तो सबको गवाह रख
इंसाफ़ है तो मेरा फटा पैरहन[9] भी ला
जलने लगे हैं प्यास से फूलों के ख़ुश्क होंट
अब्रे - बहार[10] को जरा सूए - चमन[11] भी ला
चुपचाप ख़ल्वतों[12] में पिघलने से फ़ायदा
कोई चिराग़ है तो सरे - अंजुमन[13] भी ला
इतना वह शादमाँ[14] मुझे अच्छा नहीं लगा
उस गुल के दिल में दाग़ की थोड़ी जलन भी ला
ज़ख़्मे-सफ़र[15] के दर्दे-मुसलसल[16] का सह् र तोड़
निकला हुआ वतन से ग़रीब-उल-वतन[17] भी ला
यह चश्मे-इल्तिफ़ात[18] ही काफ़ी नहीं मुझे
मेरे लिए तू नरमी-ए-कामो-दहन[19] भी ला
'शाही' उसे अजीज[20] है अपना लहू तो क्या
नाशे-शहीद[21] के लिए ख़ूनी कफ़न भी ला

1. ऐ शाही ! मुसीबतों के जंगल के किनारे कौन रहता है 2. द्वार 3. बर्फ़ का वन 4. पहाड़ काटने वाला 5. प्यार का परिच्छेद 6. जख्म गिनते समय 7. घायल शरीर 8. न्याय करने वाला 9. लिबास 10. वसंत की घटा 11. बाग की ओर 12. एकांत 13. सभा में 14. प्रसन्नचित्त 15. यात्रा के घाव 16. निरंतर पीड़ा 17. परदेसी 18. दया की दृष्टि 19. कोमल बात 20. प्यारा 21. शहीद की लाश

तीन

अब यहाँ लोगों के दुख - सुख का पता क्या आये
बंद हों घर तो मकीनों[1] की सदा क्या आये
डूबते दिन की जिलौ[2] में न सुकूँ[3] है न फ़राग़[4]
शफ़क़े - शाम[5] से चेहरों पे ज़िया[6] क्या आये
सर्द सीनों में पनपते ही नहीं दर्द के बीज
इन खराबों पे बरसने को घटा क्या आये
दूर हो कैसे तेरे जिस्म, तेरी जाँ की घुटन
तंग, बे - रौज़नो - दर[7] घर में हवा क्या आये
खो चुके लुत्फ़े - सहरखेज़ी गराँ - ख्वाब मकीन[8]
सुब्ह - दम बंद दरीचों में सबा क्या आये
खुश्क पत्ते हैं कि झड़ते ही नहीं पेड़ों से
कैसे तब्दील हो रुत, रंग नया क्या आये
गर्म हंगामा करे कौन रगों में 'शाही'
खुश्क नदियों में कोई मौजे - बला क्या आये

चार

यह बर्फ़ज़ार[9] बदन से, न जाँ से निकलेगा
लहू हो सर्द तो शोला कहाँ से निकलेगा
हज़ार घेरे रहे जब्र का हिसारे - सियह[10]
कि बाबे -राहे - अमाँ[11] दरमियाँ से निकलेगा
जो तल्ख हर्फ़ पसे-लब है[12], आम भी होगा
चढा है तीर तो आखिर कमाँ से निकलेगा
जो पेड़ फल नहीं देते वह काटते जाओ,
खिज़ाँ का जहर यूँ ही गुलिस्ताँ से निकलेगा

1. रहनेवाले 2. लगाम, काबू 3. शांति 4. सुख 5. शाम की लालिमा 6. प्रकाश 7. बिना झरोखे और दरवाजे के 8. देर तक सोने वाले सुबह जल्दी उठने का आनंद खो चुके 9. जहाँ बर्फ ही बर्फ हो 10. अन्याय का काला घेरा चाहे जितना घेरे रहे 11. सुरक्षा के रास्ते का दरवाजा 12. जो कडवा अक्षर होंठो के पीछे है

ज़रा चले तो सही पानियों पे तेज हवा
खड़ा सफ़ीना खुले वादवाँ से निकलेगा
कोई तो काम लो ग़म से, रगें ही चमकाओ
जलेंगी शमएँ, अँधेरा मकाँ से निकलेगा
खुले हैं रास्तों के भेद तो समझ 'शाही'
यह कारवाँ सफ़रे - रायगाँ[1] से निकलेगा

पाँच

शौक़े - तामीर[2] है मकाँ से परे,
फूल खिलते है गुलिस्ताँ से परे
जम रही है रगों में तारीकी
सूरते - दूद[3] शमए - जाँ से परे
यूँ न आ तश्नगी[4] के धोखे में,
आब है चश्मए - रवाँ[5] से परे
अब तो हटता नज़र नहीं आता
तीसरा शख़्स दरमियाँ से परे
मुँह कसैला है उनसे क्यों 'शाही'
लफ़्ज़ रहते है जो ज़ुबाँ से परे

---

1. निष्फल यात्रा 2. निर्माण की अभिलाषा 3. धुएँ की तरह 4. प्यास
5. बहती हुई नदी

ज़िया शबनमी

खुशबू के रंग दस्ते - सबा[1] से उतर गये
पल-भर में तेरी चाह के मौसम गुज़र गये
वे ख़्वाब जिनकी याद से आबाद था नगर
दिन के उदास फूल की सूरत बिखर गये
जिनकी जबीं[2] पे गर्दे - मुसाफ़त[3] के ज़ख़्म थे
वे लोग क्या हुए ? वे मुसाफ़िर किधर गये ?
दुनिया हमारे नक़्शे - क़दम ढूंढ़ती रही
और हम ख़ुद अपने शौक़े-तअक़्क़ुब[4] में मर गये
शीशों को पत्थरों के मुक़ाबिल सजायेंगे
अबके बरस पहाड़ पे हम भी अगर गये
उस पुर्सिशे-निगाह[5] की शबनम से ऐ 'ज़िया'
तनहाइयों[6] के दाग़ मिटे, ज़ख़्म भर गये

---

1. हवा के हाथ 2. माथा 3. यात्रा की धूल 4. पीछा करने की अभिलाषा
5. दृष्टि की पूछ-ताछ 6. अकेलेपन

जॉन ईलिया

ख़ामुशी कह रही है कान में क्या
आ रहा है मेरे गुमान में क्या
मेरी हर बात बे-असर ही रही
नुक़्स है कुछ मेरे बयान में क्या
मेरे सीने में और दुखन, क्या बात
पड़ गया घाव इस चटान में क्या
वह मिले तो यह पूछना है मुझे
अब भी हूँ मैं तेरी अमान[1] में क्या
यूँ जो तकता है आस्मान को तू
कोई रहता है आस्मान में क्या
है नसीमे-बहार[2] गर्द-आलूद[3]
ख़ाक उड़ती है उस मकान में क्या
यह मुझे चैन क्यों नहीं पड़ता
एक ही शख़्स था जहान में क्या
धूल ही बस लिखी हवाओं ने,
'जॉन' इस मेरे घर की शान में क्या

1. सुरक्षा 2. वसंत की ठंडी और धीमी हवा 3. धूल में अटी हुई

ताज सईद

पुकारती रही कुछ देर तक हवा मुझको
समझ सका न जरा भी कि क्या कहा मुझको
बहार हो कि खिजाँ मेरे दिल के गुलशन में
सुनाया करती है इक दुख-भरी सदा मुझको
निगाह में वही मंजर[1] है मौसमे-गुल[2] का
रुला रहा है अभी एक हादसा[3] मुझको
बिगड़-बिगड़ गयी है जेह्‌न[4] में वे तस्वीरें
फ़क़त[5] जो याद रही तेरी इक अदा मुझको
मैं मुंतजिर[6] हूँ, कोई मुझको भी मनायेगा,
न दी किसी ने अभी तक कोई सदा मुझको

1. दृश्य 2. वसंत ऋतु 3. दुर्घटना 4. बुद्धि 5. केवल 6. प्रतीक्षा में

नज़ीर क़ैसर

सब्ज़ है पेड़ अभी, चाँद है पानी में अभी
और कुछ देर ठहर इस शबे-फ़ानी[1] में अभी
कोई कहता नहीं, क्या देख रही है आँखें
सब गिरफ़्तार है ख्वाबों की गरानी[2] में अभी
कोई चलता नही कदमों के निशाँ से हटकर
पाँव है हल्क़ए-जंजीरे-ज़मानी में अभी[3]
मेरे चेहरे से वह पहचान रहा है मुझको
जुस्तजू[4] मेरी उसे है मेरे सानी[5] में अभी
टूटे आईनों में हैरान हैं शक्लें क्या-क्या
रब्त[6] मिलता नहीं अल्फ़ाज़ो-मआनी[7] में अभी
आहटें चुनता हूँ यादों की गुज़रगाहों[8] में
ढूंढता हूँ उसे गुमगश्ता[9] निशानी में अभी
सरे-अफ़लाको-तहे-खाक[10] बिखर आया हूँ
शौक़ रखता हूँ मगर नक़्ले-मकानी[11] में अभी
प्यास बनकर कभी चमकूंगा तेरी आँखों में
बह रहा हूँ तेरे दरियाओं के पानी में अभी

---

1. नश्वर रात 2. गहरी नींद 3. अभी पांव समय की जंजीर के घेरे में हैं 4. तलाश 5. दूसरा 6. संबंध 7. शब्दों और अर्थों 8. रास्तो 9. खोयी हुई 10. आकाशसमूह में और धरती की थाह में 11. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना

नासिर काज़मी

एक

गये दिनों का सुराग[1] लेकर किधर से आया, किधर गया वह
अजीब मानूस[2] अजनबी था, मुझे तो हैरान कर गया वह
बस एक मोती-सी छब दिखाकर, बस एक मीठी-सी धुन सुनाकर
सितारए - शाम बनके आया, ब - रंगे - ख़्वाबे - सहर[3] गया वह
खुशी की रुत हो कि ग़म का मौसम, नजर उसे ढूँढ़ती है हरदम
वह बूए-गुल[4] था कि नग़मए-जाँ[5], मेरे तो दिल में उतर गया वह
न अब वह यादों का चढ़ता दरिया, न फ़ुरसतों की उदास बरखा
यूँ ही ज़रा-सी कसक है दिल में, जो जख़्म गहरा था भर गया वह
कुछ अब सँभलने लगी है जाँ भी, बदल चला रंगे-आस्माँ[6] भी
जो रात भारी थी टल गयी है, जो दिन कड़ा था गुज़र गया वह
शिकस्ता - पा[7] राह में खड़ा हूँ, गये दिनो को बुला रहा हूँ
जो क़ाफ़िला मेरा हमसफ़र था, मिसाले-गर्दे-सफ़र[8] गया वह
हवस[9] की बुनियाद[10] पर न ठहरा किसी भी उम्मीद का घरौंदा
चली ज़रा-सी हवा मुख़ालिफ़[11], ग़ुबार बनकर बिखर गया वह
बस एक मंजिल है बुलहवस[12] की, हजार रस्ते है अह्ले-दिल[13] के
यही तो है फ़र्क मुझमें उसमें, गुजर गया मैं, ठहर गया वह
वह मैकदे को जगानेवाला, वह रात की नींद उड़ानेवाला
यह आज क्या उसके जी में आयी कि शाम होते ही घर गया वह
वह जिसके शाने[14] पे हाथ रखकर सफ़र किया तूने मंजिलों का
तेरी गली से न जाने क्यों आज सर झुकाये गुजर गया वह

1. पता 2. परिचित 3. सुबह के सपने की तरह 4. फूल की गंध 5. आत्मा का गीत 6. आकाश का रंग 7. अपाहिज 8. यात्रा की धूल की तरह 9. लालसा 10. आधार 11. विरोधी 12. लालची 13. दिल का मालिक 14. कंधे

नून० मीम० राशिद

एक

जह्‌रे-ग़म[1] की निगहे-दोस्त[2] भी तिरयाक[3] नहीं
जा, तेरे दर्द का दरमाँ[4] दिले-सद-चाक[5] नहीं
उफ़ कयामत ! है उन्हें भी हवसे-राहगुज़ार[6]
जिनका अपना कोई सानी तहे-अफ़लाक[7] नहीं
वहरे-सहवा[8] के शिनावर[9] तो वहुत मिलते हैं
अश्के-ख़ूँ[10] का मगर, ऐ दिल, कोई पैराक[11] नहीं
साग़रे-मै[12] न सही दुर्दे-तहे-जाम[13] क़बूल,
ख़ाक[14] जो हम-नफ़से-बादा[15] है वह ख़ाक नहीं
यह नसीवा है कि हम ज़िंदा हैं ऐ तुर्रए-यार[16]
अब गिरह[17] में तेरी शायद कोई पेचाक[18] नहीं
थाए गर काफ़िलए-शौक़[19] यहीं रुक जाये
मंजिले-रह-रवाँ[20] सरहदे-इदराक[21] नहीं
आफ़ताब आज हो किस रिंद के दामाँ से तुलू[22]
जब सितारा कोई मौजूद सरे-ताक[23] नहीं
मुझको बख़्शा गया वह शोला अज़ल[24] में 'राशिद',
बादो-बाराने-हवादिस से जो नमनाक नहीं[25]

---

1. दुख का विप 2. प्रेमिका की दृष्टि 3. विप का नाशक 4. इलाज 5. वह दिल जिसके सैकड़ों टुकड़े हो गये हों 6. रास्ते की लालसा 7. आकाश के नीचे 8. मदिरा का समुद्र 9. तैराक 10 खून के आंसू 11. तैराक 12. शराव का प्याला 13. प्याले की तलछट 14. मिट्टी 15. शराव के साथी 16. प्रेमिका के वालों की लट 17. गांठ 18. वल 19. अभिलाषा का समूह 20. यात्रियों का पड़ाव 21. ज्ञान की सीमा 22. सूरज आज किस शरावी के दामन से निकलेगा 23. आंख में 24. अनादिकाल 25. दुर्घटनाओं की तेज वारिश से जो गीला नही हुआ

दो

फ़लक से[1] गिरके भी टूटा न शीशए-चीनी[2]
कि रास आ हो गया एहतिमामे-खुदबीनी[3]
रहे-फरार[4] से उस तक कोई पहुँच न सका
कि बे-दिली[5] से था बरतर मक़ामे-बे-दीनी[6]
अभी तो तेशा[7] भी है और कोहकन[8] भी है
अबस है हुस्न का पिंदारे-कोहे-तमकीनी[9]
वह एक जुरआ[10] जो तेरी निगाह ने बख्शा
तमाम जह्रे-हलाहल[11], तमाम शीरीनी[12]
रहे-तलाश में गुजरी तमाम उम्र मगर
मिला न कुछ भी हवस को ब-जुज खजफ़रीनी[13]
वह आये ख्वाब में यूँ, बे-सदा चले जैसे
किनारे-कौसरो-तसनीम[14], रूहे-गुल-चीनी[15]
है सब फ़सुर्दा[16] दिलों की नजर की नक़्शगरी[17]
रुखे-निगार की यह आबो-ताबो-रंगीनी[18]
मैं दौरे-नौ[19] का खुदा ही सही मगर 'राशिद'
मेरी ग़ज़ल भी है उनके हुजूर लातीनी[20]

1. आकाश 2. काँच की बोतल 3. अभिमान का प्रयोजन 4. पलायन का रास्ता 5. उदासी 6. नास्तिकता का स्थान 7. कुदाल 8. पहाड़ काटने वाला 9. सौंदर्य की स्थिरता के पहाड़ का अभिमान व्यर्थ है 10. घूँट 11. बहुत ही तीव्र और प्रचंड विष 12. मिठास 13. लोभ को ठीकरों के अलावा कुछ भी न मिला 14. स्वर्ग की नहरों (कौसर और तसनीम) के किनारे 15. फूल बीननेवाले की रूह 16. उदास 17. चित्रकारी 18. चित्र की आकृति की यह चमक-दमक और सौंदर्य 19. समकालीन शायरी 20. रूमियों की प्राचीन भाषा

परवीन फ़ना सैयद

दश्त[1] मेरी ही दुहाई देगा
फिर मुझे आवला-पाई[2] देगा
रोशनी रूह तलक आ पहुँची
अब अँधेरे में दिखायी देगा
जर्द पत्तों का धड़कता हुआ दिल
खामुशी में भी सुनायी देगा
कश्फ़ो-आगाही[3] के आईने में
अपना बहरूप दिखायी देगा
तोड़कर देख तू आईनए-दिल,
शहर-का-शहर दुहाई देगा

1. जगल 2. पाँव में छाले 3. जो प्रकट हुआ और जिसका ज्ञान हुआ

एक

बारिश हुई तो फूलों के तन चाक[1] होगये
मौसम के हाथ भीग के सफ़्फ़ाक[2] होगये
बादल को क्या खबर है कि बारिश की चाह में
कितने बलंदो-बाला शजर[3] खाक होगये
जुगनू को दिन के वक़्त परखने की जिद करें
बच्चे हमारे अहद[4] के चालाक होगये
लहरा रही है बर्फ़ की चादर हटाके घास
सूरज की शह पे तिनके भी बेबाक होगये
बस्ती में जितने आब-गज़ीदा[5] थे सबके सब,
दरिया के रुख़ बदलते ही तैराक होगये
सूरज-दिमाग लोग भी इबलाग़े-फ़िक्र[6] में
जुल्फ़े - शबे - फिराक़ के पेचाक[7] होगये
जब भी गरीबे-शहर से कुछ गुफ़्तगू हुई,
लहजे हवाए - शाम के नमनाक होगये

दो

अब कैसी पर्दादारी, खबर आम हो चुकी,
माँ की रिदा[8] तो दिन हुए नीलाम हो चुकी
अब आस्माँ से चादरे-शब आये भी तो क्या
बे - चादरी जमीन पे इल्जाम हो चुकी

1. फट गये 2. निष्ठुर 3. ऊँचे-लंबे पेड़ 4. काल 5. पानी से डरे हुए
6. सोच की पहुँच 7. बल 8. चादर

उजड़े हुए दयार पे फिर क्यों निगाह है
इस किश्त पर तो बारिशे-इकराम[1] हो चुकी
सूरज भी उसको ढूंढ़के वापस चला गया
अब हम भी घर को लौट चलें, शाम हो चुकी
शमले[2] सँभालते ही रहे मसलहत-पसंद[3]
होना था जिसको प्यार में बदनाम हो चुकी
आँखें हैं और सुब्ह तलक तेरा इंतजार
मश्अल-ब-दस्त[4] रात तेरे नाम हो चुकी
अब यह कहें कि कीमते-फ़न[5] क्या लगायी है
इतनी सुखननवाजी[6] तो इनआम हो चुकी
कोहे-निदा[7] से भी सुख़न उतरे अगर तो क्या
ना-सामेओं[8] में हुरमते-इलहाम[9] हो चुकी

तीन

दस्ते-शब पर दिखायी क्या देंगी
सिलवटें रोशनी में उभरेंगी
घर की दीवारें मेरे जाने पर
अपनी तनहाइयों को सोचेंगी
उँगलियों को तराश दूं फिर भी
आदतन उसका नाम लिखेंगी
रंगो-बू[10] से कहीं पनाह[11] नहीं
ख्वाहिशें भी कहाँ अमाँ[12] देंगी
एक खुशबू से बच भी जाऊँ अगर
दूसरी नकहतें[13] जकड़ लेंगी
खिड़कियों पर दबीज़[14] परदे हों
बारिशें फिर भी दस्तकें देंगी

1. सम्मान की वर्षा 2. पगड़ी 3. अच्छा-बुरा समझकर काम करने वाला 4. हाथ में मश्अल उठाये 5. कला का मूल्य 6. कविता की कद्र 7. आवाज़ों का पहाड़ 8. जिनमें कला की परख न हो 9. देववाणी का सम्मान 10. फूलों का रंग और उनकी सुगंध 11. रक्षा 12. सुरक्षा 13. खुशबूएं 14. मोटे

चार

चेहरा मेरा था, निगाहें उसकी
खामुशी में भी वे बातें उसकी
मेरे चेहरे पे ग़ज़ल लिखती गयीं
शे'र कहती हुई आँखें उसकी
शोख लम्हों का पता देने लगीं
तेज होती हुई साँसें उसकी
ऐसे मौसम भी गुजारे हमने,
सुब्हें जब अपनी थी, शामें उसकी
ध्यान में उसके यह आलम था कभी
आँख महताब की, यादें उसकी
रंगे-जोइंदा[1] वह आये तो सही
फूल तो फूल हैं, शाखें उसकी
फ़ैसला मौजे-हवा[2] ने लिखा !
आँधियाँ मेरी, बहारें उसकी
खुद पे भी खुलती न हो जिसकी नजर
जानता कौन जबानें उसकी
नींद इस सोच से टूटी अक्सर
किस तरह कटती है रातें उसकी
दूर रहकर भी सदा रहती है
मुझको थामे हुए बाँहें उसकी

पाँच

यह ग़नीमत है कि उन आँखों ने पहचाना हमें
कोई तो समझा दयारे-ग़ैर[3] में अपना हमें
वे कि जिनके हाथ में तक़दीरे-फ़स्ले-गुल[4] रही
दे गये सूखे हुए पत्तों का नज़राना हमें

1. रंग का जिज्ञासु 2. हवा का झोंका 3. परदेस 4. वसंत ऋतु का भाग्य

वस्ल[1] में तेरे खराबे[2] भी लगें घर की तरह
और तेरे हिज्र[3] में बस्ती भी वीराना हमें
सच तुम्हारे सारे कड़वे थे मगर अच्छे लगे
फाँस बनकर रह गया बस एक अफ़साना हमें
अजनबी लोगों में हो तुम और इतनी दूर हो
एक उलझन-सी रहा करती है रोजाना हमें
सुनते हैं क़ीमत तुम्हारी लग रही है आजकल
सबसे अच्छे दाम किसके हैं ये बतलाना हमें
ताकि उस खुशबख्त[4] ताजिर[5] को मुबारकबाद दें
और उसके बाद दिल को भी है समझाना हमें

छः

ये हाथ चूमे गये फिर भी बे-गुलाब[6] रहे
जो रुत भी आयी खिज़ाँ के सफ़ीर[7] ऐसी थी
शहादतें[8] मेरे हक़ में तमाम जाती थीं
मगर खमोश थे मुंसिफ़[9], नजीर[10] ऐसी थी
कुतरके जाल भी, सैयाद[11] की रजा[12] के बग़ैर
तमाम उम्र न उड़ती, असीर[13] ऐसी थी
वह मेरे पाँव को छूने झुका था जिस लम्हे[14]
जो माँगता उसे देती, अमीर[15] ऐसी थी
फिर उसके बाद न देखे विसाल[16] के मौसम
जुदाइयों की घड़ी चश्मगीर[17] ऐसी थी
बस इक निगाह मुझे देखता चला जाता
उस आदमी की मोहब्बत फ़क़ीर ऐसी थी
न सर को फोड़के तू मर सका तो क्या शिकवा[18]
जुनूं-शआर[19] कहाँ मैं भी हीर ऐसी थी

1. मिलन 2. निर्जन स्थान 3. विरह 4. सौभाग्यशाली 5. व्यापारी 6. गुलाब जैसा रंग नहीं आया 7. दूत 8. गवाहियाँ 9. न्यायकर्ता 10. उदाहरण 11. शिकारी 12. इच्छा 13. कैदी 14. क्षण 15. धनवान 16. मिलन 17. दृष्टि छीनने वाली 18. शिकायत 19. पागलपन की आदत

फ़रीद जावेद

गुबार दिल पे बहुत आ गया है, धो लें आज
खुली फ़ज़ा में कहीं दूर जा के रो लें आज
दयारे-ग़ैर[1] में अब दूर तक है तनहाई
ये अजनबी दरो-दीवार कुछ तो बोलें आज
तमाम उम्र की बेदारियां[2] भी सह लेंगे
मिली है छाँव तो बस एक नींद सो लें आज
तरब[3] का रंग मोहब्बत की लौ नहीं देता
तरब[4] के रंग में कुछ दर्द भी समो लें आज
किसे खबर है कि कल ज़िंदगी कहाँ ले जाये,
निगाहे - यार, तेरे साथ ही न हो लें आज

1. परदेस 2. जागरण 3. आनद 4. खुशी

'फ़ारिग़' बुख़ारी

एक

देखकर उस हसीन पैकर[1] को
नशा-सा आ गया समंदर को
डोलती डगमगाती-सी नाव
पी गयी आके सारे सागर को
ख़ुश्क पेड़ों में जान पड़ने लगी
देखकर रूप के समंदर को
वह्र[2] प्यासे की जुस्तुजू में है
है सिद्फ़[3] की तलाश गौहर[4] को
कोई तो नीम-वा[5] दरीचों से
देखे इस रतजगे के मंजर को
एक देवी है मुंतजिर[6] 'फ़ारिग़',
वा[7] किये पट, सजाये मदर को

दो

कितने शिकवे गिले है पहले ही
राह में फ़ासले है पहले ही
कुछ तलाफ़ी निगारे-फ़स्ले-खाँ[8]
हम लुटे क़ाफ़िले है पहले ही
और ले जायेगा कहाँ गुलचीं,
सरे-मक़्तल[9] खुले है पहले ही

---

1. आकृति 2. समुद्र 3. सीपी 4. मोती 5. अधखुले 6. प्रतीक्षक
7. खोले हुए 8. ऐ बरसते मौसम जैसी प्रेमिका, कुछ हानि की पूर्ति हो
9. क़त्ल करने की जगह पर

अब ज़बाँ काटने की रस्म न डाल
कि यहाँ लब सिले हैं पहले ही
इतनी बे-रहम हो न तेज़ हवा
फूल कम-कम खिले हैं पहले ही
और किस शै की है तलब 'फ़ारिग़'
दर्द के सिलसिले हैं पहले ही

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

एक

हसरते-दीद में गुजरी हैं जमाने कब से[1]
दश्ते-उम्मीद में गर्दां हैं[2] जमाने कब से
देर मे आँख पे उतरा नहीं अश्कों का अजाब[3]
अपने जिम्मे है तेरा क़र्ज न जाने कब से
किस तरह पाक हो बे-आरजू लम्हों का हिसाब
दर्द आया नहीं दरबार सजाने कब से
सर करो साज कि छेड़ें कोई दिल-सोज गजल
"ढूंढता है दिले-शोरीदा बहाने कब से"
पुर करो जाम कि शायद हो इस लहजा रवाँ
रोक रखा है जो इक तीर क़जा[4] ने कब से
'फ़ैज़' फिर कब किसी मक़्तल[5] में करेंगे आबाद
लब पे वीरां है शहीदों के फ़साने कब से

दो

न अब रक़ीब[6], न नासेह[7], न गमगुसार कोई
तुम आशना थे तो थी आशनाइयाँ क्या-क्या
जुदा थे हम तो मयस्सर थी कुर्बतें[8] कितनी
बहम[9] हुए तो पड़ी है जुदाइयाँ क्या-क्या
पहुँचके दर पे तेरे कितने मोतबर[10] ठहरे
अगरचे रह में हुई जग-हँसाइयाँ क्या-क्या

1. देखने की अभिलाषा में समय कब से गुजर रहा है 2. आशा के जंगल में घूम रहे हैं 3. पीड़ा 4. मृत्यु 5. कत्ल करने की जगह 6. प्रतिद्वंद्वी 7. उपदेश देनेवाला 8. सामीप्य 9. मिलन 10. विश्वस्त

हम ऐसे सादा-दिलों की नियाजमंदी[1] से
बुतों ने की है जहाँ में खुदाइयाँ क्या-क्या
सितम[2] पे खुश, कभी लुत्फ़ो-करम[3] से रंजीदा[4],
सिखायी तुमने हमें कज-अदाइयाँ[5] क्या-क्या

तीन

सितम सिखलायेगा रस्मे-वफ़ा ऐसे नहीं होता
सनम दिखलायेंगे राहे-खुदा ऐसे नहीं होता
गिनो सब हसरतें जो खूँ हुई है तन के मक़तल[6] में
मेरे क़ातिल, हिसाबे-खूँबहा[7] ऐसे नहीं होता
जहाने-दिल[8] में काम आती हैं तदबीरें[9] न ताज़ीरें[10]
यहाँ पैमाने-तस्लीमो-रजा ऐसे नहीं होता[11]
हर इक शब हर घड़ी गुजरे क़यामत, यूँ तो होता है
मगर हर सुब्ह हो रोजे-जजा[12] ऐसे नहीं होता
रवाँ है नब्जे-दौराँ, गर्दिशों में आस्माँ सारे[13]
जो तुम कहते हो सब-कुछ हो चुका, ऐसे नहीं होता

---

1. आज्ञाकारिता 2. अत्याचार 3. अनुकंपा और कृपा, 4. दुखी 5. टे
अदाएँ 6. क़त्ल करने की जगह 7. खून की कीमत का हिसाब 8. दिल
दुनिया 9. उपचार 10. दंड 11. यहाँ स्वीकृति और सहमति की प्रतिज्ञा
नहीं होती 12. कयामत के बाद हिसाब का दिन 13. समय की नाड़ी चल र
है, सारे आकाश चक्कर लगा रहे हैं

महबूब खिज़ाँ

एक

देख दरिया है, किनारे को [illegible]
यह मोहब्बत, यह मोहब्बत [illegible]
इस जमाने को तरस [illegible]
आह, यह तश्नगी-ए-[illegible]
मीठी बातों से [illegible]
नर्म आंखों में [illegible]
ज़ख्म बिगड़े तो [illegible]
वरना कांटा भी [illegible]
आपकी याद [illegible]
इतनी [illegible]
खत जो [illegible]
हाँ ज़रा [illegible]
हाय [illegible]
कभी [illegible]

यह सुकूने-बे-जिहत[1], यह कशिश अजीब है
तुझमें बंद कर दिया किसने शश-जिहात[2] को
साहिले-खयाल[3] पर कहकशाँ[4] की छूट थी
एक मौज ले गयी उन तजल्लियात[5] को
आँख जब उठे, भर आये, शे'र अब कहा न जाये
कैसे भूल जाइये भूलने की बात को
देख ऐ मेरी निगाह, तू भी है जहाँ भी है
किसने बा-खबर कहा दूसरे की जात को
क्या हुई रिवायतें[6], अब हैं क्यों शिकायतें,
इश्क़े-नामुराद[7] से हुस्ने-बेसबात[8] को
ऐ बहारे-सर-गराँ[9] तू खिजाँ-नसीब[10] है,
और हम तरस गये तेरे इल्तिफ़ात[11] को।

तीन

हम आप क़यामत से गुजर क्यों नही जाते
जीने की शिकायत है तो मर क्यों नही जाते
कतराते हैं, बल खाते हैं, घबराते है क्यों लोग
सर्दी है तो पानी में उतर क्यों नही जाते
आँखों में चमक है तो नजर क्यों नही आता
पलकों पे गुहर है तो बिखर क्यों नही जाते
अखबार में रोज़ाना वही शोर है, यानी
अपने से ये हालात सँवर क्यों नही जाते
यह बात अभी मुझको भी मालूम नही है
पत्थर इधर आते है, उधर क्यों नही जाते

1. अकारण शांति 2. छ: दिशाएँ 3. कल्पना का तट 4. आकाश-गंगा 5. रोशनियाँ 6. किसी के मुंह से सुनी हुई बातें ज्यों की त्यों किसी से कहना 7. अभागा प्रेम 8. नश्वर रूप 9. रुष्ट वसंत ऋतु 10. जिस के भाग्य में पतझड़ हो 11. कृपा

तेरी ही तरह अब ये तेरे हिज्र के दिन भी
जाते नजर आते है, मगर क्यों नहीं जाते
अब याद कभी आये तो आईने से पूछो
'महबूब खिज़ाँ' शाम को घर क्यों नहीं जाते

चार

हर बात यहाँ बात बढ़ाने के लिए है
यह उम्र जो धोखा है तो खाने के लिए है
यह दामने-हसरत[1] है वही ख्वाबे-गुरेजाँ[2]
जो अपने लिए है न जमाने के लिए है
उतरे हुए चेहरे में शिकायत है किसी की
रूठी हुई रंगत है मनाने के लिए है
ग़ाफ़िल तेरी आँखों का मुक़द्दर है अँधेरा,
यह फ़र्श तो राहों में बिछाने के लिए है
घबरा न सितम से, न करम से, न अदा से
हर मोड़ यहाँ राह दिखाने के लिए है

1. अभिलाषा का आँचल 2. भागकर आने वाला स्वप्न

यह सुकूने-
तुझमें बंद च
नाहिने-गया
एक मौज
और जब उठे
कैसे भूल उ
देख ले मेरी
कितने ना-ख़ु-
शगवार हुई रिश्ता
इश्के-नामुराद'
ऐ बहारे-गर-ः
और हम नरम

तीन

हम और क़रार
जीने की ज़िन्दग-
[illegible] हैं, [illegible]
गर्दी है, जो पानी
आँखों में चमक है।
[illegible] है [illegible]
अगवार में रोता-
[illegible]
[illegible] अभी [illegible]
[illegible] आते.

दिल के मुतालबात[1] लकीरों में बँट गये
जैसे कि कोई फ़र्क नहीं अरजो - तूल[2] में
जो कुछ था उम्र भर का उसे भी लुटा दिया
अब एक उम्र और लगेगी हुसूल[3] में

तीन

बे-हिस[4] हूँ आईने की तरह खुद निगाह हूँ
आबाद बस्तियों ही का हाले - तबाह हूँ
अंधा नहीं हूँ, लोग जो कहते हैं ठीक है
मैं एक क़त्ले - आम का ऐनी गवाह[5] हूँ
पहले भी सादगी से गुजरता था मेरा वक़्त
माज़ूल[6] हो गया हूँ तो क्या, बादशाह हूँ
रखो अजायबात[7] में ये मिट्टियों के ढेर
शह्‌रे - सुख़न की आख़िरी आरामगाह हूँ
सहरा की दोपहर में हूँ बरगद का एक पेड़
ठहरा हुआ सफ़र हूँ मुसाफ़िर की राह हूँ
सब कुछ लुटा दिया है तभी मैं हूँ बे-निशाँ
दिल के मुआमलात में आलमपनाह हूँ

---

1. माँगें 2. चौड़ाई और लंबाई 3. प्राप्ति 4. चेतनाशून्य 5. ऐसा गवाह जिसने अपनी आँख से देखा हो 6. जिसे पद से हटा दिया गया हो 7. विचित्रताएँ

माजिद-उल-बाक़री

एक

मुझी से पूछ रहा था मेरा पता कोई
बुतों के शहर में मौजूद था ख़ुदा कोई
ख़मोशियों की चटानों को तोड़ने के लिए
किसी के पास नहीं तीशए-सदा[1] कोई
समझ सका न मगर कोई पत्थरों की ज़बाँ,
हर एक लम्हा लगा बोलता हुआ कोई
इक आँसुओं का समंदर था जलपरी का लिबास
मिला तो ऐसे मिला पैकरे-वफ़ा[2] कोई
हर एक ज़ेह्न में अपने ही, बंद है 'माजिद',
ख़ुद अपने ख़ोल से बाहर है रास्ता कोई

दो

चेहरे छुपे हुए हैं बयानों की धूल में,
काँटे नहीं हैं फूल लगे हैं बबूल में
मौजे-हवा में आग न पानी का डर हमें
तब्दीलियाँ अबस हैं हमारे उसूल में
शाख़ों से हमने बाँधे है बे-फसल मोजिज़े[3],
सूँघो तो नकहतें[4] भी हैं काग़ज़ के फूल में
लफ़्ज़ों की इक पतंग थी बढ़कर निकल गयी,
किस बेवफ़ा को दिल से लगाया था भूल में

---

1. आवाज़ की कुदाल 2. भक्ति की आकृति 3. हमने डालियों में बे-मौसम चमत्कार बाँधे हैं 4. ख़ुशबूएँ

दिल के मुतालबात[1] लकीरों में बँट गये
जैसे कि कोई फ़र्क नहीं अरजो-तूल[2] में
जो कुछ था उम्र भर का उसे भी लुटा दिया
अब एक उम्र और लगेगी हुसूल[3] में

तीन

बे-हिस[4] हूँ आईने की तरह खुद निगाह हूँ
आबाद बस्तियों ही का हाले-तबाह हूँ
अंधा नहीं हूँ, लोग जो कहते हैं ठीक है
मैं एक क़त्ले-आम का ऐनी गवाह[5] हूँ
पहले भी सादगी से गुज़रता था मेरा वक़्त
माज़ूल[6] हो गया हूँ तो क्या, बादशाह हूँ
रखो अजायबात[7] में ये मिट्टियों के ढेर
शह्रे-सुखन की आख़िरी आरामगाह हूँ
सहरा की दोपहर में हूँ बरगद का एक पेड़
ठहरा हुआ सफ़र हूँ मुसाफ़िर की राह हूँ
सब कुछ लुटा दिया है तभी मैं हूँ बे-निशाँ
दिल के मुआमलात में आलमपनाह हूँ

1. माँगें 2. चौड़ाई और लंबाई 3. प्राप्ति 4. चेतनाशून्य 5. ऐसा गवाह जिसने अपनी आँख से देखा हो 6. जिसे पद से हटा दिया गया हो 7. विचित्रताएँ

मुनीर नियाज़ी

एक

कैसी - कैसी वे - समर यादों के हालों में रहे
हम भी इतनी ज़िंदगी कैसे बवालों में रहे
इक नज़रबंदी का आलम थी नगर की ज़िंदगी
कैद में रहते थे जब तक शहरवालों में रहे
हम अगर होते तो मिलते तुझसे भी जाने-जहाँ,
ख्वाब थे नापैद[1] दुनिया के मलालों में रहे
वह चमकना बर्क़[2] का दश्तो-दरो-दीवार पर,
सारे मंज़र एक पल उसके उजालों में रहे
क्या थी वे बातें जो कहना चाहते थे वक्ते-मर्ग[3],
आखिरी दम यार अपने किन खयालों में रहे
दूर तक मस्कन[4] थे बन उनकी सदाओं के 'मुनीर'
देर तक उन देवियों के ग़म शिवालों में रहे

दो

बेचैन बहुत फिरना, घबराये हुए रहना
इक आग-सी जज़्बों[5] की दहकाये हुए रहना
छलकाये हुए फिरना खुशबू लबे - लाली[6] की
इक बाग़-सा साथ अपने महकाये हुए रहना
उस हुस्न का शेवा[7] है जब इश्क़ नज़र आये
परदे में चले जाना, शरमाये हुए रहना

---

1. लुप्त 2. बिजली 3. मरते समय 4. घर 5. भावनाओं 6. लाल होंठ
7. ढंग

इक शाम-सी कर रखना काजल के करिश्मे से
इक चाँद-सा आँखों में चमकाये हुए रहना
आदत ही बना ली है तुमने तो 'मुनीर' अपनी
जिस शह्‌र में भी रहना उकताये हुए रहना

तीन

ग़म की बारिश ने भी तेरे नक़्श को धोया नहीं
तूने मुझको खो दिया, मैंने तुझे खोया नहीं
नींद का हल्का गुलाबी-सा ख़ुमार आँखों में था
यूँ लगा जैसे वह शब को देर तक सोया नहीं
हर तरफ़ दीवारो-दर और उनमें आँखों के हुजूम
कह सके जो दिल की हालत वो लबे-गोया[1] नहीं
जुर्म आदम ने किया और नस्ले-आदम को सजा
काटता हूँ जिंदगी भर, मैंने जो बोया नहीं
जानता हूँ एक ऐसे शख़्स को मैं भी 'मुनीर'
ग़म से पत्थर हो गया लेकिन कभी रोया नहीं

चार

अश्के-रवाँ की नहर है और हम हैं दोस्तो
उस बे-वफ़ा का शहर है और हम हैं दोस्तो
ये अजनबी-सी मंजिलें और रफ़्तगाँ की याद
तनहाइयों का जहर है और हम हैं दोस्तो
लायी है अब उड़ाके गये मौसमों की बास
बरखा की रुत का क़हर है और हम हैं दोस्तो
फिरते हैं मिस्ले-मौजे-हवा शहर-शहर में
आवारगी की लहर है और हम हैं दोस्तो
शामे-अलम ढली तो चली दर्द की हवा
रातों का पिछला पहर है और हम हैं दोस्तो

1. बोलनेवाला होंट

पाँच

दश्त बाराँ[1] की हवा से फिर हरा-सा हो गया
मैं फ़क़त[2] ख़ुशबू से उसकी ताज़ादम-सा हो गया
उसके होने से हुआ पैदा ख़याले-जाँ-फ़िज़ा[3],
जैसे इक मुर्दा जमी में बाग़ पैदा हो गया
फिर हवाए-इश्क़ से आशुफ़्तगी[4] ख़ूबाँ[5] में है
इन दिनों में हुस्न भी आज़ार[6] जैसा हो गया
है कहीं महसूर[7] शायद वह हक़ीक़त[8] अहद[9] की
जिसका रस्ता देखते इतना ज़माना हो गया
ग़मरुबा है हाल कहना दिल का उस बुत से 'मुनीर',
जिसके ग़म में अपने दिल का हाल ऐसा हो गया

1. वर्षा 2. केवल 3. प्राणवर्द्धक विचार 4. व्यग्रता 5. सुंदरियों 6. रोग, विपदा 7. घिरी हुई 8. यथार्थता 9. समय, काल, युग

न हसन

एक

रोशनी के जिस्म[1] की तस्ख़ीर[2] कर दी जायेगी
तीरगी[3] इस शहर की तक़दीर कर दी जायेगी
इर्तिक़ा[4] के नाम पर तै होगा रजअत[5] का सफ़र,
गुमरही एजाज़ से ताबीर कर दी जायेगी[6]
एक कमरे की घुटन महफ़ूज़ रखने के लिए
सारी गलियों की हवा ज़ंजीर कर दी जायेगी
जागती आँखों से भी हम ख़्वाब देखेंगे मगर
ख़्वाहिशे-ताबीर बे-ताबीर कर दी जायेगी
अपने ख़ालो-ख़द[7] की असलियत न मानेगा कोई
आईने के जुर्म की तशहीर[8] कर दी जायेगी

दो

अपनी नुमू[9] को ताबो-तवानाई[10] सौंप आ
तू ख़ाक है तो ख़ाक को रअनाई सौंप आ
सूरज के साथ तू भी अँधेरों में गुम न हो
शब के सफ़र में अपनी तवानाई सौंप आ
साहिल पे सीप, सीप में गौहर[11] तलाश कर
चेहरे पे आँख, आँख में बीनाई सौंप आ

तारीक[1] जंगलों से मेरे भाई लेके आ
'यूसुफ़' हुनर न खो किसी क़स्रे-अज़ीज़[2] में
अपने उजाड़ घर में भी रानाई[3] लेके आ

तीन

आगही[4], वहम के साये में लिपटकर आयी
धूप की लहर कहाँ शहर के अंदर आयी
दर-ब-दर झाँक रही है कोई दस्तक लेकिन
आशना चाप किसी घर से न बाहर आयी
कोई एज़ाज़[5] नहीं ज़ीस्त[6] का हासिल, न सही
इक तेरी चाह की तोहमत तो मयस्सर आयी
तेरी तख़लीक़[7] में ख़ुद को भी तराशा मैंने
मेरी सूरत भी ख़दो-ख़ाल[8] बदलकर आयी
राह निकली तो तेरे घर की तरफ़ ही निकली
बात आयी तो तेरी बात ही लब पर आयी
दावरे-हश्र[9] को अपनी ही पड़ी है 'यूसुफ़'
ख़ल्क़ भी संग-ब-दामां सरे-महशर आयी[10]

चार

आँख चेहरों की सदाक़त[11] से मुकरती जाये,
उम्र सायों के तअक़्क़ुब[12] में गुज़रती जाये
ज़र्द[13] आँगन के सुलगते हुए सन्नाटे में
बे-नवा[14] दर्द की लै और उभरती जाये
फिर मुंडेरों पे शफ़क़[15] फूल रही है शायद
फिर सरे-क़रियए-जाँ[16] राख बिखरती जाये

---

1. अँधेरे 2. मिस्र के प्राचीन बादशाह अज़ीज़ का महल 3. सुंदरता 4. 5. सम्मान 6. जीवन 7. सृजन 8. गाल और तिल 9. ईश्वर 10. क॰ के दिन जनता भी अपनी गोदों में पत्थर भरकर लायी 11. सच्चाई 12. करना 13. पीला 14. बेआवाज़ 15. ऊषा 16. जीवन के गांव के किन

यह मेरे फ़र्ते-नज़र[1] से भी गुरेज़ाँ[2] है मगर,
उसकी ख़ुनक मेरी साँसों में उतरती जाये
दिन की दस्तक पे खुला नींद का नश्शा 'यूसुफ़'
शाहिदे-ख़्वाब[3] सजी धूप में गलती जाये

1. दृष्टि के पार 2. बचकर निकल जानेवाला 3. स्वप्न की चाह

रज़ी अख्तर शौक़

एक

ये पेड़ हैं कुछ दिन वह शजर[1] है कोई दिन और
अब छाँव सरे-राहगुज़र है कोई दिन और
जिनको मेरे अनफ़ास[2] ने लौ दी है वे शमएँ
जलती रहें, अब मेरा सफ़र है कोई दिन और
ता-देर नहीं उसकी रफ़ाक़त[3] का नशा भी
यह ख्वाब भी ऐ दीदा-ए-तर[4] है कोई दिन और
बिछड़ा है तो अब उसका सफर है वह जिधर जाये
है भी तो हमें उसकी खबर है कोई दिन और
वह आग लगेगी कि भरा शहर जलेगा
लोगो, जो यही रक़्से-शरर[5] है कोई दिन और
तुम देखना यह पेड़ भी कट जायेगा एक दिन
हम हैं तो अभी नख्ले-हुनर[6] है कोई दिन और

दो

सलामत आये है फिर उसके कूचओ-दर से
न कोई संग ही आया न फूल ही बरसे
मैं आगही के अजब मंसबों पे फ़ाइज़[7] हूँ
कि आप अपना ही मुनकिर[8] हूँ अपने अंदर से
न जाने किसको यह एजाज़े-फ़न[9] मिला होगा
तमाम शहर में बिखरे हुए है पत्थर से

1. पेड़ 2. साँसों 3. साथ, दोस्ती 4. भीगी आँख 5. चिंगारी का नाच
6. कला का पेड़ 7. पहुँच गया हूँ 8. इंकार करनेवाला 9. कला का सम्मान

अब इसके मौजो-तलातुम[1] में डूबने से न डर
गुहर[2] भी तुझको मिले थे इसी समंदर से
यह एहतेमामे-चिराग़ाँ[3] भी किस कमाल का है
दिये जले हैं तो मैं बुझ गया हूँ अंदर से
अजब समाँ था कि अब तक हैं ज़ख्म-ज़ख्म आँखें
मैं कोर-चश्म भला, आगही के मंजर से[4]

तीन

यह कौन डूब गया और उभर गया मुझमें
यह कौन साये की सूरत गुज़र गया मुझमें
यह किसके सोग में शोरीदा-हाल[5] फिरता हूँ
वह कौन शख्स था ऐसा कि मर गया मुझमें
अजब हवाए-बहारां ने चारासाजी की
वह ज़ख्म जिसको न भरना था, भर गया मुझमें
वह आदमी कि जो पत्थर था, जी रहा है अभी
जो आईना था वह कब का बिखर गया मुझमें
विसाल[6] क्या कि वह जब भी क़रीब से गुजरा
तो यूँ लगा कि कोई रक़्स[7] कर गया मुझमें
वह साथ था तो अजब धूप-छाँव रहती थी
बस अब तो एक ही मौसम ठहर गया मुझमें

.

1. लहर और बाढ़ 2. मोती 3. दीप जलाने का प्रबंध 4. मैं अंधा ही अच्छा था कि ज्ञान के ये दृश्य तो न देख पाता 5. दुर्दशाग्रस्त 6. मिलन 7. नाच

डॉक्टर वजीर आग़ा

एक

धूप के साथ गया साथ निभानेवाला
अब कहाँ आयेगा वह लौटके आनेवाला
रेत पर छोड़ गया नक़्श हज़ारों अपने
किसी पागल की तरह नक़्श मिटानेवाला
सब्ज शाखें[1] कभी ऐसे तो नही चीख़ती है
कौन आया है? परिंदों को डरानेवाला
आरिजे-शाम[2] की सुर्ख़ी[3] ने किया फ़ाश[4] उसे
परदए-अब्र[5] में था आग लगानेवाला
सफरे-शब[6] का तक़ाजा है मेरे साथ रहो
दश्त पुर-हौल है[7], तूफ़ान है आनेवाला
मुझको दर-परदा[8] सुनाता रहा क़िस्सा अपना
अगले वक़्तों की हिकायात[9] सुनानेवाला
शबनमी घास, घने फूल, लरजती किरनें
कौन आया है ख़जानों को लुटानेवाला
अब तो आराम करें सोचती आँखें मेरी,
रात का आख़िरी तारा भी है जानेवाला

दो

सितम हवा का अगर तेरे तन को रास नही
कहाँ से लाऊँ वह झोंका जो मेरे पास नहीं

1. डालियाँ 2. सध्या के गाल 3. लाली 4. प्रकट 5. घटा की ओट 6. रात की यात्रा 7. जगल भयकर है 8. छुपकर 9. कथाएँ

पिघल चुका हूँ तमाजत[1] में आफताब की मैं
मेरा वजूद भी अब मेरे आस-पास नहीं
मेरे नसीब में कब थी बरहनगी अपनी
मिली वह मुझको तमन्ना कि बेलिबास नहीं
किधर से उतरे कहाँ आके तुझसे मिल जाये
अभी नदी के चलन से तू रूशनास[2] नही
खुला पड़ा है समंदर किताब की सूरत
वही पढे इसे आकर जो ना-शनास[3] नही
लहू के साथ गयी तन-बदन की सब चहकार[4]
चुभन सबा में नहीं है कली में बास नहीं

तीन

लाजिम[5] कहाँ कि सारा जहाँ खुश-लिबास[6] हो
मैला बदन पहनके न इतना उदास हो
इतना न पास आ कि तुझे ढूंढते फिरें
इतना न दूर जा कि हमा-वक़्त[7] पास हो
इक जूए-बे-क़रार हो क्यों दिलकशी तेरी[8]
क्यों इतनी तश्ना-लब[9] मेरी आँखों की प्यास हो
पहना दे चाँदनी को क़बा[10] अपने जिस्म की
उसका बदन भी तेरी तरह बे-लिबास[11] हो
रंगों की क़त्लगह में कभी तू भी आके देख
शायद कि रंगे-जख्म कोई तुझको रास हो
मैं भी हवाए-सुब्ह की सूरत फिरूँ सदा
शामिल गुलों की बास में गर तेरी बास हो
आये वह दिन कि किश्ते-फ़लक हो हरी-भरी,
बंजर जमी पे मीलों तलक सब्ज घास हो

---

1. गर्मी 2. परिचित 3. अपरिचित 4. चहचहाहट 5. आवश्यक 6. अच्छे वस्त्र पहने हों 7. हर समय 8. तेरी सुदरता इक व्याकुल नदी जैसी क्यों हो 9. जिसके होंठ प्यास के मारे सूख गये हों 10. चोगा 11. निर्वस्त्र

शकेब जलाली

एक

जाती है धूप उजले परों को समेटके
ज़ख्मों को अब गिनूंगा मैं विस्तर पे लेटके
मैं हाथ की लकीरें मिटाने पे हूँ बजिद
गो जानता हूँ नक़्श नहीं ये सलेट के
दुनिया को कुछ खबर नहीं, क्या हादसा हुआ
फेंका था उसने संग[1] गुलों में लपेटके
फ़व्वारे की तरह न उगल दे हर एक बात
कम-कम वह बोलते हैं जो गहरे हैं पेट के
इक नुक़रई[2] खनक के सिवा क्या मिला 'शकेब'
टुकड़े यह मुझसे कहते हैं टूटी पलेट के

दो

आके पत्थर तो मेरे सहन में दो-चार गिरे
जितने उस पेड़ के फल थे, पसे-दीवार गिरे
ऐसी दहशत थी फज़ाओं में खुले पानी की
आँख झपकी भी नहीं, हाथ से पतवार गिरे
मुझे गिरना है तो मैं अपने ही क़दमों में गिरूँ
जिस तरह सायए-दीवार पे दीवार गिरे
तीरगी छोड़ गये दिल में उजाले के खतूत
ये सितारे मेरे घर टूटके बेकार गिरे
क्या हवा हाथ में तलवार लिये फिरती थी
क्यों मुझे ढाल बनाने को ये छतनार गिरे

1. पत्थर 2. चाँदी की

देखकर अपने दरो-वाम लरज उठता हूँ
मेरे हमसाये में जब भी कोई दीवार गिरे
वक़्त की डोर खुदा जाने कहाँ से टूटे
किस घड़ी सर पे यह लटकी हुई तलवार गिरे
हमसे टकरा गयी खुद बढ़के अंधेरे की चटान
हम सँभलकर जो बहुत चलते थे नाचार गिरे
क्या कहूँ दीदए-तर, यह तो मेरा चेहरा है,
संग कट जाते हैं, बारिश की जहाँ धार गिरे
हाथ आया नहीं कुछ रात की दलदल के सिवा
हाय किस मोड़ पे ख्वाबों के परस्तार गिरे
वह तजल्ली[1] की शुआएँ[2] थीं कि जलते हुए तीर
आईने टूट गये आईना - बरदार गिरे
देखते क्यों हो 'शकेब' इतनी बुलंदी की तरफ़,
न उठाया करो सर को कि यह दस्तार गिरे

तीन

वही झुकी हुई बेलें वही दरीचा था
मगर वह फूल-सा चेहरा नजर न आता था
मैं लौट आया हूँ खामोशियों के सहरा से
वहाँ भी तेरी सदा का गुबार फैला था
करीब तैर रहा था बतों का एक जोड़ा
मैं आबजू[3] के किनारे उदास बैठा था
शबे-सफ़र[4] थी क़बा तीरगी की पहने हुए
कहीं-कहीं पे कोई रोशनी का धब्बा था
बनी नहीं जो कहीं पर कली की तुरबत[5] थी
सुना नहीं जो किसी ने हवा का नौहा[6] था
ये आड़ी-तिरछी लकीरें बना गया है कौन
मैं क्या कहूँ मेरे दिल का वरक़ तो सादा था

1. रोशनी 2. किरनें 3. नदी 4. यात्रा की रात 5. कब्र 6. मरनेवाले के लिए रोना-पीटना

मैं ख़ाकदाँ से निकलकर भी क्या हुआ आज़ाद
हर इक तरफ़ से मुझे आस्माँ ने घेरा था
उतर गया तेरे दिल में तो शे'र कहलाया,
मैं अपनी गूँज था और गुंबदों में रहता था
उधर से बारहा गुज़रा मगर ख़बर न हुई
कि ज़ेरे-संग[1] ख़ुनक पानियों का चश्मा था
वह उसका अक्से-बदन[2] था कि चाँदनी का कँवल
वह नीली झील थी या आस्माँ का टुकड़ा था
मैं साहिलों पे उतरकर 'शकेब' क्या लेता
अज़ल से नाम मेरा पानियों पे लिखा था

चार

आता है हर चढ़ाई के बाद इक उतार भी
पस्ती[3] से हमकनार मिले कोहसार[4] भी
आख़िर को थकके बैठ गयी इक मकाम पर,
कुछ दूर मेरे साथ चली रहगुज़ार भी
दिल क्यों धड़कने लगता है उभरे जो कोई चाप
अब तो नहीं किसी का मुझे इंतज़ार भी
जब भी सुकूते-शाम[5] में आया तेरा ख़याल
कुछ देर को ठहर-सा गया आबशार[6] भी
कुछ हो गया है धूप से ख़ाकिस्तरी[7] बदन
कुछ जम गया है राह का मुझ पर गुबार भी
इस फ़ासलों के दश्त[8] में रहबर[9] वही बने
जिसकी निगाह देख ले सदियों के पार भी
ऐ दोस्त, पहले क़ुर्ब[10] का नश्शा अजीब था
मैं सुन सका न अपने बदन की पुकार भी

1. पत्थर के नीचे 2. शरीर का प्रतिबिंब 3. नीचाई 4. पर्वतमाला
5. शाम का सन्नाटा 6. झरना 7. मटमैला 8. जंगल 9. पथ-प्रदर्शक
10. निकटता

रस्ता भी वापसी का कहीं बन में खो गया
ओझल हुई निगाह से हिरनों की डार भी
क्यों रो रहे हो राह के अंधे चिराग़ को
क्या बुझ गया हवा से लहू का शरार भी
कुछ अक़्ल भी है बाइसे-तौक़ीर[1], ऐ 'शकेब'
कुछ आ गये है बालों में चाँदी के तार भी

पाँच

लौ दे उठे, वह हर्फ़े-तलब[2] सोच रहे है
क्या लिखिये, सरे-दामने-शब[3] सोच रहे है
क्या जानिये मंजिल है कहाँ, जाते हैं किस सम्त[4]
भटकी हुई इस भीड़ में सब सोच रहे है
भीगी हुई एक शाम की दहलीज पे बैठे
हम दिल के सुलगने का सबब सोच रहे हैं
टूटे हुए पत्तों से दरख़्तों का तअल्लुक़[5]
हम दूर खड़े कुंजे-तरब[6] सोच रहे हैं
इस लहर के पीछे भी रवाँ हैं नयी लहरे
पहले नही सोचा था, जो अब सोच रहे है
हम उभरे भी, डूबे भी स्याही के भँवर में,
हम सोये नहीं, शब-हमा-शब[7] सोच रहे है

छः

उतरीं अजीब रोशनियाँ रात ख़्वाब में,
क्या-क्या न अक्स तैर रहे थे सराब[8] में
कब से हैं एक हर्फ़ पे नजरें जमी हुईं
वह पढ़ रहा हूँ जो नहीं लिखा किताब में

---

1. प्रतिष्ठा का कारण 2. याचना की बात 3. रात के अंतिम भाग मे
4. दिशा 5. संबंध 6. आनंद का एकांत 7. रात-रात भर 8 मृगतृष्णा

शहज़ाद अहमद

एक

यह सोचकर कि तेरी जबीं[1] पर न वल पड़े
वस दूर ही से देख लिया और चल पड़े
दिल में फिर इक कसक-सी उठी मुद्दतों[2] के वाद
इक उम्र के रुके हुए आंसू निकल पड़े
सीने में बे-क़रार[3] हैं मुर्दा मोहब्बतें
मुमकिन है यह चिराग़ कभी ख़ुद ही जल पड़े
ऐ दिल, तुझे वदलती हुई रुत से क्या मिला
पौदों में फूल और दरख़्तों में फल पड़े
अब किस के इंतजार में जागें तमाम शब[4]
वह साथ हो तो नींद में कैसे ख़लल[5] पड़े
सूरज-सी उसकी तवा[6] है शोला-सा उसका रंग
छू जाये उस वदन को तो पानी उबल पड़े
'शहज़ाद' दिल को जब्त[7] का यारा नहीं रहा
निकला जो माहताब[8] समंदर उछल पड़े

दो

लौट आयीं तेरे लम्स[9] से महकी हुई शामें
फिर आग लगा दी तेरी साँसों ने हवा में
रक़्सां हैं[10] इस लय पे सितारे हों कि शबनम,
क्या सहर है इस दिल के धड़कने की सदा में
इक नूर[11] का सैलाब[12] है बंद आँखों के अंदर,
लिपटे हुए चेहरे हैं अँधेरे की रिदा[13] में

1. माया 2. बहुत समय 3. व्याकुल 4. रात 5. बाधा 6, स्वभाव
7. सहन 8. चांद 9. स्पर्श 10. नाच रहे है 11. प्रकाश 12. बाढ़ 13. चादर

पानी नहीं कि अपने ही चेहरे को देख लूं
मंज़र[1] ज़मीं के ढूंढता हूँ माहताब[2] में
फिर तीरगी[3] के ख्वाब से चौंका है रास्ता
फिर रोशनी-सी दौड़ गयी है सहाब[4] में
कब तक रहेगा रूह[5] पे पैराहने-बदन[6]
कब तक हवा असीर[7] रहेगी हुबाब[8] में
यूं आईना-ब-दस्त[9] मिली परबतों की बर्फ़
शरमाके धूप लौट गयी आफ़ताब[10] में
जीने के साथ मौत का डर है लगा हुआ
खुश्की दिखायी दी है समंदर को ख्वाब में
गुजरी है बार-बार मेरे सर से मौजे-खुश्क[11]
उभरा हूँ डूब-डूबके तस्वीरे-आब[12] में
एक याद है कि छीन रही है लबों से जाम
एक अक्स है कि कांप रहा है शराब में
चूमा है मेरा नाम लबे-सुर्ख़[13] ने 'शकेब'
या फूल रख दिया है किसी ने किताब में

---

1. दृश्य 2. चांद 3. अंधेरा 4. घटा 5. आत्मा 6. शरीर का वस्त्र 7. बंदी 8. बुलबुला 9. हाथ में दर्पण लिये 10. सूरज 11. सूखी लहर 12. पानी का चित्र 13. लाल होंट

शह्ज़ाद अह्मद

एक

यह सोचकर कि तेरी जबीं[1] पर न बल पड़े
बस दूर ही से देख लिया और चल पड़े
दिल में फिर इक कसक-सी उठी मुद्दतों[2] के बाद
इक उम्र के रुके हुए आँसू निकल पड़े
सीने में बे-क़रार[3] हैं मुर्दा मोहब्बतें
मुमकिन है यह चिराग़ कभी खुद ही जल पड़े
ऐ दिल, तुझे बदलती हुई रुत से क्या मिला
पौदों में फूल और दरख्तों में फल पड़े
अब किस के इंतजार में जागें तमाम शब[4]
वह साथ हो तो नींद में कैसे खलल[5] पड़े
सूरज-सी उसकी तबा[6] है शोला-सा उसका रंग
छू जाये उस बदन को तो पानी उबल पड़े
'शहजाद' दिल को जब्त[7] का यारा नही रहा
निकला, जो माहताब[8] समंदर उछल पड़े

दो

लौट आयी तेरे लम्स[9] से महकी हुई शामें
फिर आग लगा दी तेरी साँसों ने हवा में
रक़्सां हैं[10] इस लय पे सितारे हों कि शबनम,
क्या सहर है इस दिल के धड़कने की सदा में
इक नूर[11] का सैलाब[12] है बंद आँखों के अंदर,
लिपटे हुए चेहरे हैं अँधेरे की रिदा[13] में

1. माथा 2. बहुत समय 3. व्याकुल 4. रात 5. बाधा 6, स्वभाव
7. सहन 8. चाँद 9. स्पर्श 10. नाच रहे हैं 11. प्रकाश 12. बाढ़ 13. चादर

जिस आग ने रक्खा है क़दम दिल की ज़मीं पर
सूरज-से दमकते हैं निशाने-कफ़े-पा[1] में
इस शौक़ में हर उम्र हमें नींद न आयी,
इक चोर छुपा बैठा है सीने की गुफा में
इस दिल को नहीं मुहसिने-गुलिस्तां[2] की ज़रूरत,
यह फूल महकता है किसी और हवा में
जाग उठा है दिल में कोई सोया हुआ सहरा
हम घर में हैं 'शहज़ाद' कि जंगल की फ़ज़ा में

तीन

जब आफ़ताब[3] न निकला तो रोशनी के लिए
जलाके हमने परिंदे फ़ज़ा में छोड़ दिये
तमाम उम्र रहीं ज़ेरे-लब[4] मुलाक़ातें
न उसने बात बढ़ायी न हमने होंठ सिये
ख़बर नहीं कि उफ़क़[5] किस जगह पे हो मौजूद
ज़मीन पर भी क़दम फूंक-फूंककर रखिये
सफ़र भी दूर का है और कहीं नहीं जाना
अब इन्तिहा इसे कहिये कि इब्तिदा कहिये
हवा उठा न सकी बोझ अब्र[6] का 'शहज़ाद'
ज़मीं के अश्क[7] भी आख़िर समंदरों ने पिये

चार

आज तक उसकी मोहब्बत का नशा तारी है
फूल बाकी नहीं ख़ुशबू का सफ़र जारी है
सहर लगता है पसीने में नहाया हुआ जिस्म
यह अजब ख़्वाब में डूबी हुई बेदारी है

---

1. पदतल के चिह्न 2. बाग पर उपकार करने वाला 3. सूरज 4. होंठों में 5. क्षितिज 6. घटा, बादल 7. आंसू

आज का फूल तेरी कोख से जाहिर होगा
शाखे-दिल खुश्क न हो अबके तेरी बारी है
ध्यान भी उसका है मिलते भी नहीं हैं उससे,
जिस्म से बैर है, साये से वफादारी है
दिल को तनहाई का अहसास भी बाकी न रहा
वह भी धुंदला गयी जो शक्ल बहुत प्यारी है
इस तगो-ताज[1] में टूटे है सितारे कितने
आस्माँ जीत सका है न जमी हारी है
कोई आया है जरा आँख तो खोलो 'शहजाद'
अभी जागे थे अभी सोने की तैयारी है

पाँच

सितारा अपनी भी ताबिंदगी[2] न देख सका
वो धुंद थी कि यह मंजर[3] कोई न देख सका
तलाश करते हुए उँगलियाँ जला डाली
वह तीरगी[4] थी कि मैं शम्अ भी न देख सका
मिला था शाम मुझे इक बुझा हुआ सूरज
मैं उसके बाद कभी रोशनी न देख सका
जो रब्त[5] बाक़ी थे सब क़ता[6] कर लिये उसने
वह मेहरबाँ[7] मेरी बेचारगी न देख सका
निगाह वैसे तो बामे-फ़लक[8] को छू आयी,
मैं जिस जमीं पे खड़ा था वही न देख सका
वही है आईनाख़ाना[9] वही है तस्वीरें
मैं उम्र भर कोई सूरत नयी न देख सका
तमाम शहर में वह दीदावर[10] हुआ मशहूर
जो अपनी नाक से आगे कभी न देख सका

1. दौड़-धूप 2. चमक 3. दृश्य 4. अँधेरा 5. संबंध 6. विच्छेद 7. दयालु 8. आकाश की छत 9. शीशाघर 10. पारखी

नज़र ने पहाड़ के पत्थर तो गिन लिये लेकिन
रगों में बहती हुई ज़िंदगी न देख सका
हवाएँ रंग बदलती हैं किस तरह 'शहज़ाद',
दरख़्त[1] देख चुके आदमी न देख सका

---

1. पेड़

शायर लखनवी

एक

कुछ अजब जिंदगी के मंजर हैं
दूर तक रेत के समंदर हैं
मेरी ही रोशनी का पैकर[1] है
चंद शक्लें जो दिल के अंदर हैं
दिल जो ठहरे तो कुछ सुराग़[2] मिले
क़र्ज किस-किस नज़र के हम पर है
है बड़ी चीज़ नाज़ुकी दिल की
किससे कहिये कि लोग पत्थर है
खुल गयी आँख तो खुला हम पर
ख्वाब बेदारियों से बेहतर हैं[3]
खामुशी खुद है एक गहराई
चुप है जो लोग वे समंदर है
जब से देखा है इक नजर उनको
खुद को भी हम कहाँ मयस्सर[4] हैं
ज़ख्म पर क्या गुजर गयी 'शायर'
रेजा-रेजा तमाम निश्तर है[5]

दो

अपना दर्द समझने वाले शहर के अंदर कितने हैं
वीरानी खुद बोल रही है बस्ती में घर कितने हैं

---

1. आकृति 2. निशान 3. सपने जागने से ज्यादा अच्छे है 4. उपलब्ध, प्राप्त 5. चीरफाड का आला भी सारा टूट कर बिखर गया है

सरशार सिद्दीक़ी

एक

इसी काविश[1] में उम्र हो गयी सर्फ़
लिख सकूँ अपनी सोच हर्फ़-ब-हर्फ़
लफ़्ज बनकर छलक पड़े जज्बे[2]
मैंने देखा है अपने शौक़ का जर्फ़[3]
मैंने उसको वफा-शिआर[4] कहा
कितने बे-आबरू हुए ये हर्फ़
चुपके-चुपके सुलग रहा है वुजूद[5]
धीरे-धीरे पिघल रही है बर्फ़
कितनी बातें हैं मावरा-ए-सुखन[6]
कितने ना-दीदा हर्फ़ हैं पसे-हर्फ़[7]

दो

झलक दिखा, कि तेरे वस्ल की नवीद[8] मिले
गुनाहगार को कुछ तो सवाबे-दीद[9] मिले
किसी ने जान न बख्शी, फ़िराक़ हो कि विसाल
वफा की राह में सब मरहले शदीद[10] मिले
बस इक झलक पे क़नाअत[11] नही मेरा ईमाँ
हरीसे-जल्वा[12] को कुछ ग़ैब[13] से मजीद[14] मिले

1. जिज्ञासा 2. भावनाएँ 3. गंभीरता 4. जिसका काम वफा करना है 5. अस्तित्व 6. बात से परे 7. अक्षर के पीछे कितने अनदेखे अक्षर है 8. शुभ सूचना 9. देखने का पुण्य 10. कठिन 11. थोडी-सी चीज़ पर संतोष 12. दर्शन का लालची 13. परोक्ष 14. ज्यादा

नज़र मिली भी जो उससे तो यह हुआ महसूस
तकल्लुफ़न कोई जैसे किसी से ईद मिले
नफ़ी-ए-जात की तल्क़ीन करने वाले बुज़ुर्ग[1]
खुद अपने नफ़्से-गुनहगार[2] के मुरीद[3] मिले
रजाइयत[4] में तो 'सरशार' का जवाब नहीं
हुजूमे-यास[5] में भी हमको पुर-उम्मीद[6] मिले

तीन

मिलने को तो मिल रहा हूँ सबसे,
पर मेरा मुआमला है रब से
मैं अर्श-नशी[7] का नामलेवा
हाँ, नाम भी लो मेरा अदब से
जी-जान से चाहते थे उसको
गुस्ताख़ हुए इसी सबब से
इस इश्क़ की सरकशी ने मुझको,
मुमताज़[8] भी कर दिया है सबसे
सूरज भी सफ़र में हो मेरे साथ,
इक ऐसा मुआहिदा[9] हो शब से
फिर रात न आये ज़िंदगी में
उस दिन का है इंतज़ार कबसे

---

1. स्वयं को नकारने का गुरुमन्त्र देने वाले (महात्मा 2. पापी स्वभाव 3. शिष्य 4. आशावाद 5. बहुत ज्यादा निराशा 6. आशावान 7. आकाश पर रहने वाला खुदा 8. विशिष्ट 9. समझौता, करारनामा

सरमद सहबाई

गूंगे वदन में झाँककर फिर दे सदा मुझे
साकित[1] लबों पे हर्फ़ की सूरत जगा मुझे
लम्हा-व-लम्हा खुद पे मुझे मुनकशिफ़[2] न कर
मैं भेद हूँ तेरा, किसी ढब से छुपा मुझे
यह रेजए-वदन[3] है पिघलता चला गया
दरिया की तरह साथ बहा ले गया मुझे
क्या जुस्तजू[4] है, अपने तअक़्क़ुब[5] में आप हूँ
कब से सता रहा है यह इक दायरा मुझे
मैं आईने के साथ बिखरता चला गया
खुद मेरा अपना जिस्म उगलता रहा मुझे
बिखरी जो धूप जिस्म की रंगत बदल गयी
सूरज उतर गया है कहाँ ढूंढता मुझे

1. मौन 2. प्रकट 3. शरीर का कण 4. तलाश 5. पीछा करना

सलाहुद्दीन 'नदीम'

जो मेरे देखे हुए ख्वाबों में ढल जायेगी
वही दुनिया तेरी जन्नत को भी शरमायेगी
खुल गयी आँख तो दरवाजा खुलेगा दिल का
घर के अंदर भी तेरे ताजा हवा आयेगी
शब के सन्नाटे में तारों के धड़कने की सदा
बर्फ़ में डूबे हुए जिस्मों को गरमायेगी
दर्द खुशबू है इसे दिल में मुक़य्यद[1] कर लो
किसी नाफ़े[2] की तरह[3] रूह को महकायेगी
आईना टूटके बिखरा है तमन्नाओं का
किरचियाँ चुनते हुए उम्र गुजर जायेगी
हर नफ़स[4] रंग बदलती हुई दुनिया में 'नदीम'
एक ही शक्ल कई चेहरों को दिखलायेगी

•

1. बंदी 2. मृगनाभि, कस्तूरी 3. भाँति 4. साँस, क्षण

सलीम अह्मद

एक

इश्क़ जब्रे-हाल[1] का पाबंद है
घर में रहिये, राहे-सहरा[2] बंद है
दामने-मिज़गाँ[3] भी नम होता नहीं
आँख में आशोबे-दरिया[4] बंद है
इश्क क्या है, आँख है जिस आँख में
हुस्न का ख्वाबे-तमन्ना[5] बंद है
इस पे क्या पिघलें कि दिल पत्थर हुआ
इस पे क्या रोयें कि रोना बंद है
एक-इक पत्ती में गुलशन है असीर
एक-इक ज़र्रे में सहरा बंद है
एक क़तरा खुश्क आँखों की सबील[6]
लेकिन इस क़तरे में दरिया बंद है
शहरे-नापुरसाँ[7] है शहर इदराक[8] का
कूए-आगाही[9] का रस्ता बंद है
हुस्न का आईना है टूटा हुआ
इश्क़ की चश्मे-तमाशा[10] बंद है
बंद रहने दो तसव्वुर में इन्हें
इन उजाड़ आँखों में दुनिया बंद है

---

1. दशा का अन्याय 2. जंगल का रास्ता 3. पलकों का किनारा 4. नदी की हलचल 5. कामना का सपना 6. पियाऊ 7. निश्चित लोगों का शहर 8. ज्ञान 9. ज्ञान की गली 10. देखनेवाली आँख

दो

नया मज़मूं[1] किताबे-जीस्त[2] का हूँ,
निहायत ग़ौर से सोचा गया हूँ
सुनें मुझको तो मैं धड़कन हूँ दिल की
नहीं सुनते तो सहरा की सदा हूँ
मेरी जानिब[3] कोई आये तो पूछूं
निशाने-राह[4] हूँ, मंजिल हूँ, क्या हूँ
किसी को क्या बताऊँ, कौन हूँ मैं
कि अपनी दास्तां भूला हुआ हूँ
खुद अपनी दीद से अंधी है आँखें
खुद अपनी गूँज से बहरा हुआ हूँ
मेरी सेराबियों[5] में तश्नगी है
कि मैं दरिया हूँ लेकिन रेत का हूँ
वह रन[6] मुझमें पड़ा है खैरो-शर[7] का
कि अपनी जात में इक करबला हूँ
मेरा सीना है छलनी नें[8] की सूरत
इन्हीं जख्मों से मैं नग़मा-सरा[9] हूँ
मुझे शबनम का आईना मिला है
उसी में गुल की सूरत देखता हूँ
मेरी मौजूदगी से बंदगी है
कि जब से गुम हुआ हूँ मैं खुदा हूँ

तीन

तेरी जानिब से दिल में वसवसे[10] हैं,
ये कुत्ते रात-भर भौंका किये हैं
लिबासे-दर्द भी हमने उतारा
ये कपड़े अब पुराने हो चुके हैं

---

1. लेख 2. जीवन की किताब 3. ओर 4. रास्ते का निशान 5. प्यास न होना 6. घमासान की लड़ाई 7. अच्छाई और बुराई 8. बाँसुरी 9. गानेवाला 10. बुरी शंकाएँ

उतारें केंचुली अब तल्ख जज़बात[1]
कि वे अपने में घुटकर रह गये हैं
न हो मायूस खुश्क आँखों से, ऐ दिल
कि सहराओं[2] में भी दरिया बहे हैं
'सलीम' अच्छी ग़ज़ल है तेरी, माना,
मगर ये फूल घूरे पर खिले हैं

चार

जाके फिर लौट जो आये वह ज़माना कैसा
तेरी आँखों ने यह छेड़ा है फसाना कैसा
आँख सरशारे-तमन्ना[3] है तो वादा कर ले
चाल कहती है कि अब लौट के आना कैसा
मुझसे कहता है कि साये की तरह साथ हैं हम
यूं न मिलने का निकाला है बहाना कैसा
इसका शिकवा तो नहीं है, न मिले तुम हमसे
रंज इसका है कि तुमने हमें जाना कैसा
खुद भी सोचा था बहुत, उसने भी पूछा था बहुत
हाल जब खुद ही न समझे तो सुनाना कैसा
तुझको पाने की हवस थी सो किसे था मालूम
अपने ही आप को खो बैठेंगे, पाना कैसा

---

1. कडवी भावनाएँ 2. रेगिस्तानों 3. कामना मे डूबी हुई

साक़ी फ़ारुक़ी

एक

ये लोग ख्वाब में भी बरहना[1] नहीं हुए
ये बदनसीब तो कभी तनहा नहीं हुए
यह क्या कि अपनी जात[2] से बे-पर्दगी[3] न हो
यह क्या कि अपने आप पर इफशा[4] नहीं हुए
हम वह सदाए-आब[5] कि मिट्टी में जज्ब[6] है
खुश है कि आबशार[7] का नग़मा[8] नहीं हुए
वह संगदिल पहाड़ कि पिघले न अपनी वर्फ़,
यह रंज है कि राजिक़े-दरिया[9] नहीं हुए
तेरे बदन की आग से आँखों में है धनक
अपने लहू से रंग ये पैदा नहीं हुए

दो

दामन में आँसुओं का ज़ख़ीरा[10] न कर अभी
यह सब्र का मुकाम है गिरिया न कर अभी
जिसकी सख़ावतों[11] की जमाने में धूम है
वह हाथ सो गया है तकाजा न कर अभी
नजरें जलाके देख मनाजिर की आग में
इसरारे-काइनात[12] से परदा न कर अभी
ये ख़ामुशी का जह्र नसों में उतर न जाये
आवाज़ की शिकस्त गवारा न कर अभी

---

1. नग्न 2. अस्तित्व 3. पर्दे में न रहना 4. प्रकट 5. पानी की आवाज़ 6. आत्मसात 7. झरना 8. गाना 9. दरिया का अन्नदाता 10. संचित 11. दानशीलता 12. ब्रह्मांड के भेद

दुनिया पे अपने इल्म की परछाइयाँ न डाल
ऐ रोशनी-फ़रोश[1] अँधेरा न कर अभी

तीन

एक दिन ज़ह्न में आसेब[2] फिरेगा ऐसा
यह समनज़ार[3] नजर आयेगा सहरा ऐसा
मैंने क्या रंज दिये अश्क न लौटाये मुझे
ऐ मेरे दिल, कोई बे-फ़ैज़[4] न देखा ऐसा
एक मुद्दत से कोई लहर न उठी मुझमें
मेरी आँखों से छुपा चाँद का चेहरा ऐसा
रात कहती है मुलाक़ात न होगी अपनी
तू कोई ख़्वाब न मैं नींद का माता ऐसा
जिस्म की सतह पे कागज की तरह जिंदा है
तू समंदर है न मैं डूबनेवाला ऐसा
तेरे चेहरे पे उजाले की सख़ावत[5] ऐसी
और मेरी रूह में नादार[6] अँधेरा ऐसा
हर नये दर्द की पोशाक पहन ली मैंने
जाँ मुहज़्ज़ब[7] न हुई, मैं था बरहना[8] ऐसा

चार

रेत की सूरत जाँ प्यासी थी, आँख हमारी नम न हुई
तेरी दर्द-गुसारी[9] से भी रूह की उलझन कम न हुई
शाख़ से टूटके बे-हुरमत[10] हैं, वैसे भी बे-हुरमत थे
हम गिरते पत्तों पे मलामत[11] कब मौसम-मौसम न हुई
नागफनी - सा शोला है जो आँखों में लहराता है
रात कभी हमदम न बनी और नींद कभी मरहम न हुई

---

1. प्रकाश बेचनेवाला 2. भूत-प्रेत 3. चमेली का वन 4. किसी का भर[illegible] न करने वाला 5. दानशीलता 6. दरिद्र 7. सभ्य 8. नग्न 9. सहानुभू[illegible] हमदर्दी 10. अपमानित 11. निंदा

अब यादों की धूप-छाँव में परछाईं-सा फिरता हूँ
मैंने बिछड़कर देख लिया है, दुनिया नर्म क़दम न हुई
मेरी सहरा-ज़ाद[1] मोहब्बत, अब्रे-सियह[2] को ढूँढती है
एक जनम की प्यासी थी, इक बूँद से ताज़ादम न हुई

1. जंगल में जन्मी 2. कालीघटा

सैयद हामिद यजदानी

बादबाँ[1], पतवार, हर इक आसरा टूटा हुआ
लेके निकला है सफ़ीना नाख़ुदा टूटा हुआ
एक चेहरे के हैं कितने अक्स मेरे सामने
हाथ में बैठा हूँ लेकर आईना टूटा हुआ
शाख़ से होकर जुदा जिस तरह मुरझाया हो फूल
फिर रहा है होके वह मुझसे जुदा टूटा हुआ
ये ख़िज़ाँ[2] का है करिश्मा, या बहारों का करम
नकहते-गुल[3] मुज़महिल[4], दस्ते-सबा[5] टूटा हुआ
हर तरफ़ बिखरी हुई थीं मेरे दिल की किरचियाँ[6]
जोड़ने पर भी यह आईना रहा टूटा हुआ
छोटी-छोटी रंजिशें[7] दीवार बनकर रह गयी
क्या जुड़े अब दोस्ती का सिलसिला टूटा हुआ
ज़िंदगी की राह पर 'हामिद' चले जाते हैं लोग
दिल है महरूमे-यक़ीं[8] और हौसला टूटा हुआ

---

1. बादबान 2. पतझड 3. फूल की सुगंध 4. शिथिल 5. ह
6. छोटे-छोटे टुकडे 7. मनमुटाव 8. विश्वास न होना

हबीब जालिब

एक

यह और बात तेरी गली में न आयें हम
लेकिन यह क्या कि शहर तेरा छोड़ जायें हम
मुद्दत हुई है कूए-बुतां[1] की तरफ़ गये
आवारगी से दिल को कहाँ तक बचायें हम
शायद ब-क़ैदे-ज़ीस्त यह साअत न आ सके[2]
तुम दास्ताने-शौक़ सुनो और सुनायें हम
बे-नूर[3] हो चुकी है बहुत शहर की फ़ज़ा[4]
तारीक[5] रास्तों में कहीं खो न जायें हम
उसके बग़ैर आज बहुत जी उदास है
'जालिब' चलो कहीं से उसे ढूंढ लायें हम

दो

भुला भी दे उसे जो बात हो गयी प्यारे
नये चिराग़ जला रात हो गयी प्यारे
तेरी निगाहे-पशेमां[6] को कैसे देखूंगा
कभी जो तुझसे मुलाक़ात हो गयी प्यारे
उदास-उदास हैं शमएं बुझे-बुझे साग़र
यह कैसी शामे-ख़राबात[7] हो गयी प्यारे
कभी-कभी तेरी यादों की सांवली रुत में
बहे जो अश्क तो बरसात हो गयी प्यारे

---

1. सुन्दरियों की गली 2. शायद जीवन में यह घड़ी न आ सके 3. अँधेरी 4. वातावरण 5. अँधेरे 6. पछतावे की दृष्टि 7. मधुशाला की शाम